

Visit

**Dwarkadheeshvastu.com**

For

**FREE** Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos  
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

\*\*\*\*

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

\*\*\*\*

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK**.

**Contact : Ankit Mishra ( +91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com )**

\*\*\*\*

# EKADASHI VRAT KATHAYEN

## (Hindi)

\*\*\*\*

## विषय सूची

नाम एकादशी	मास	पक्ष	पृष्ठ	नाम एकादशी	मास	पक्ष	पृष्ठ
1. एकादशी व्रत परिचय			३	18. योगिनी एकादशी	आषाढ़	कृष्ण	९४
2. २६ एकादशियों के महात्म्य का वर्णन			४	19. देवशयनी एकादशी	आषाढ़	शुक्ल	१०२
3. एकादशी व्रत की विधि			६	20. चातुर्मास्य व्रत की विधि			१०७
4. उत्पन्ना एकादशी	मार्गशीर्ष	कृष्ण	९	21. कामिका एकादशी	श्रावण	कृष्ण	१२४
5. मोक्षदा एकादशी	मार्गशीर्ष	शुक्ल	२२	22. पुत्रदा एकादशी	श्रावण	शुक्ल	१३१
6. सफला एकादशी	पौष	कृष्ण	२८	23. अज्ञा एकादशी	भाद्रपद	कृष्ण	१३८
7. पुत्रदा एकादशी	पौष	शुक्ल	३४	24. वामन (परिवर्तनी)			
8. घटतिला एकादशी	माघ	कृष्ण	३९	एकादशी	भाद्रपद	शुक्ल	१४१
9. जया एकादशी	माघ	शुक्ल	४५	25. इन्दिरा एकादशी	आश्विन	कृष्ण	१४७
10. विजया एकादशी	फाल्गुन	कृष्ण	५१	26. पाशांकुशा एकादशी	आश्विन	शुक्ल	१५३
11. आमलकी एकादशी	फाल्गुन	शुक्ल	५७	27. रमा एकादशी	कार्तिक	कृष्ण	१५७
12. पापमोचिनी एकादशी	चैत्र	कृष्ण	६३	28. देवोत्थानी (प्रबोधनी)			
13. कामदा एकादशी	चैत्र	शुक्ल	७०	एकादशी	कार्तिक	शुक्ल	१६४
14. बरुथनी एकादशी	बैसाख	कृष्ण	७७	29. पद्मिनी एकादशी	अधिकमास	शुक्ल	१७६
15. मोहनी एकादशी	बैसाख	शुक्ल	८१	30. परमा एकादशी	अधिकमास	कृष्ण	१८७
16. अपरा एकादशी	ज्येष्ठ	कृष्ण	८७	31. आरतियाँ			१९५
17. निर्जला एकादशी	ज्येष्ठ	शुक्ल	९१				

## एकादशी व्रत परिचय

भगवान् श्री कृष्णचन्द्र अर्जुन से बोले कि एक बार नैमिषारण्य में शौनक आदि अट्ठासी हजार ऋषि एकत्रित हुये, उन्होंने सूतजी से प्रार्थना की हे सूतजी ! कृपाकर एकादशियों का महात्म्य सुनाने की कृपा करें। सूतजी बोले—हे महर्षियों ! एक वर्ष में बारह महीने होते हैं और एक महीने में दो एकादशी होती हैं, सो एक वर्ष में चौबीस एकादशी हुईं। जिस वर्ष में लौढ़ मास (अधिक मास) पड़ता है, उस वर्ष दो एकादशी और बढ़ जाती हैं। इस तरह कुल छब्बीस एकादशी होती हैं। उनके नाम ये हैं—

1-उत्पन्ना, 2-मोक्षदा (मोक्ष को देने वाली), 3-सफला (सफलता देने वाली) 4-पुत्रदा (पुत्र को देने वाली), 5-घटतिला, 6-जया,

7-विजया, 8-आमलकी, 9-पापमोचनी (पापों को नष्ट करने वाली), 10-कामदा, 11-बरुथनी, 12-मोहनी, 13-अपरा, 14-निर्जला, 15-योगिनी, 16-देवशयनी, 17-कामिका, 18-पुत्रदा, 19-अजा, 20-परिवर्तिनी, 21-इन्दिरा, 22-पाशाँकुशा, 23-रमा, 24-देवोत्थानी एवं अधिक मास की दोनों एकादशियों के नाम 25-पद्मिनी और 26-परमा हैं। ये सब एकादशी यथानाम तथाफल देने वाली है।

### 26 एकादशियों के महात्म्य का वर्णन

जो पुण्य चन्द्र या सूर्य ग्रहण में स्नान या दान से होता है, तथा जो पुण्य अन्न दान, जल दान, स्वर्ण दान, भूमि दान, गौ दान, कन्या

दान तथा अश्वमेधादि यज्ञ करने से होता है। जो पुण्य तीर्थ यात्रा तथा कठिन तपस्या करने से होता है, उससे अधिक पुण्य एकादशी व्रत रखने से होता है। एकादशी व्रत रखने से शरीर स्वस्थ रहता है, अन्तड़ियों की मैल दूर हो जाती है, हृदय शुद्ध हो जाता है, श्रद्धा भक्ति उत्पन्न हो जाती है। प्रभु को प्रसन्न करने का मुख्य साधन एकादशी का व्रत है। एकादशी व्रत करने वाले के पितृ कुयोनि को त्याग कर स्वर्ग में चले जाते हैं, एकादशी व्रत करने वाले के दस पुरखे पितृ पक्ष के और दस पुरखे मातृ पक्ष के और दस पुरखे पत्नी पक्ष के बैकुण्ठ को जाते हैं। दूध, पुत्र, धन और कीर्ति को बढ़ाने वाला एकादशी का व्रत है, एकादशी का जन्म भगवान् के शरीर से हुआ है, प्रभु के समान पतित पावनी है, अतः आपको लाखों प्रणाम हैं।

## एकादशी व्रत की विधि

व्रतधारी को दशमी के दिन मांस और प्याज तथा मसूर की दाल इत्यादि निषेध वस्तुओं का त्याग करना चाहिए, रात्रि को ब्रह्मचर्य रखे, स्त्री से रमण नहीं करना चाहिए। प्रातः एकादशी को लकड़ी का दाँतुन न करें, निम्बू, जामुन या आम के पत्ते लेकर चबा ले और ऊंगली से कंठ शुद्ध करले, वृक्ष से पत्ता तोड़ना भी वर्जित है, अतः स्वयं गिरा हुआ पत्ता लेकर सेवन करे, फिर स्नान कर मन्दिर में जाना चाहिए, गीता पाठ करना या सुनना चाहिए, प्रभु के सामने यह प्रण करना चाहिए कि आज मैं चोर, पाखण्डी और दुराचारी मनुष्य से बात नहीं करूँगा और न किसी के दिल को दुखाऊँगा,

गौ, ब्राह्मण को फलाहार देकर प्रसन्न करूँगा, रात्रि को जागरण कर कीर्तन करूँगा, "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" इस द्वादश अक्षर के मंत्र का जाप करूँगा, राम, कृष्ण, नारायण इत्यादि विष्णु सहस्र नाम को कण्ठ का भूषण बनाऊँगा, ऐसी प्रतिज्ञा करके मन्दिर में प्रार्थना करे कि मेरी लाज आपके हाथ है अतः मेरे प्रण को पूरा करना।

यदि अचानक भूलकर किसी निन्दक से बात कर बैठे, तो उसका पाप दूर करने को सूर्य नारायण के दर्शन तथा धूप-दीप से भगवान् की पूजा कर क्षमा मांग लेनी चाहिए, एकादशी के दिन झाड़ू नहीं देनी चाहिए, चींटी आदि जीव मर जाते हैं तथा बाल नहीं कटाने चाहियें, अधिक न बोलना चाहिए, अन्न का दान देना चाहिए, अन्न दान लेना भी वर्जित है, झूठ कपटादि कृकर्म न करना चाहिए और

दशमी के साथ मिली हुई एकादशी वृद्ध मानी जाती है, शिव उपासक तो इसको मान लेते हैं। वैष्णवों को योग्य द्वादशी से मिली हुई एकादशी का व्रत करना चाहिये और त्रयोदशी आने से पूर्व व्रत पूर्ण कर लेना चाहिए। फलाहारी को गोभी, गाजर, शलजम, पालक, कुलफा का साग इत्यादि न खाना चाहिये और मूली, आम, अंगूर, केला, बादाम, पिशता इत्यादि अमृत फलों का सेवन करना चाहिए। प्रत्येक वस्तु प्रभु को भोग लगाकर तथा तुलसीदल छोड़कर खानी चाहिये, द्वादशी के दिन ब्राह्मणों को मिष्ठान दक्षिणा से प्रसन्न कर परिक्रमा ले लेनी चाहिये, किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाये तो उस दिन एकादशी व्रत रखकर उसका फल उसे संकल्प कर देना चाहिए और गङ्गा जी में पुष्प अस्थि प्रवाह करने पर भी एकादशी व्रत रखकर फल प्राणी

के निमित्त दे देना चाहिये, प्राणी मात्र को अन्तर्यामी का अवतार समझकर किसी से छल कपट न करना, मधुर भाषण करना, कोई अपमान करे तो उसे आशीर्वाद देना, क्रोध मत करना, क्रोध चाण्डाल का अवतार है आप देवता रूप हो संतोष कर लेना सन्तोष का फल सर्वदा मधुर होता है, सत्य भाषण करना, मन में दया रखना। इस विधि से व्रत करने वाला दिव्य फल को प्राप्त करता है।

## एकादशी महात्म्य कथा

उत्पन्ना एकादशी व्रत महात्म्य

मार्गशिर मास की कृष्णपक्ष की एकादशी

श्री सूतजी बोले हे मुनियो! विधि सहित इस एकादशी महात्म्य को

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा था। भक्तजन ही इस व्रत को प्रेम पूर्वक सुनते हैं और इस लोक में अनेकों सुखों को भोगकर अन्त में विष्णु पद को प्राप्त करते हैं। श्रीसूतजी ने कहा— हे प्रभो! इस एकादशी व्रत का महात्म्य क्या है? इस व्रत को करने से क्या पुण्य मिलता है और उसकी विधि क्या है? सो आप मुझसे कहिये। ऐसा सुनकर श्री भगवान् ने कहा—हे अर्जुन! सबसे पहले हेमन्त ऋतु के मार्गशीर्ष महीने में कृष्णपक्ष की एकादशी का व्रत करना चाहिये। दशमी की शाम को दातुन करनी चाहिये और रात को भोजन नहीं करना चाहिये। एकादशी को सुबह संकल्प नियम के अनुसार कार्य करना चाहिये। दोपहर को संकल्प पूर्वक स्नान करना चाहिये। स्नान करने से पहले शरीर पर मिट्टी का लेपन लगाना चाहिये। चन्दन लगाने का मंत्र इस

प्रकार है —

अश्व क्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुकान्ते वसुन्धरे  
उवृतापि बराहेण कृष्णे न सताबाहुना ।  
मृतिके हरमें पाप यन्मया पूर्वक संचितम्  
त्वयाहतेन पापेन गच्छामि परमागतिम् ॥

स्नान के बाद धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान का पूजन करना चाहिये। रात को दीपदान करना चाहिये। ये सत्कर्म भक्ति पूर्वक करने चाहिये। उस रात को नींद और स्त्री प्रसंग को त्याग देना चाहिये। एकादशी को दिव्य तथा रात्रि में भजन सत्संग आदि शुभ कर्म करने चाहिये। उस दिन श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिये और उनसे अपनी गलतियों की क्षमा माँगनी चाहिये। धार्मिकजनों को शुक्ल और

कृष्णपक्ष की दोनों एकादशियों को एक सा समझना चाहिये, उनमें भेद मानना उचित नहीं है। ऊपर लिखी विधि के अनुसार जो मनुष्य एकादशी का व्रत करते हैं उनको शंखोद्धार तीर्थ एवं दर्शन करने से जो पुण्य मिलता है वह एकादशी व्रत के पुण्य के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं। व्यतीपात योग में, संक्रान्ति में तथा चन्द्र, सूर्य ग्रहण में दान देने से और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य मनुष्य को एकादशी का व्रत करने से प्राप्त होता है। जो फल देवपाठी ब्राह्मणों को एक हजार गौदान करने से मिलता है उससे दशगुना अधिक पुण्य एकादशी का व्रत करने से मिलता है। दश श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो पुण्य मिलता है वह एकादशी के पुण्य के दशवें भाग के बराबर होता है।

निर्जल व्रत करने का आधा फल एक बार भोजन करने के बराबर होता है। उपरोक्त कोई सा एक व्रत जरूर करना चाहिये। एकादशी का व्रत करने पर ही यज्ञ, दान, तप आदि मिलते हैं अन्यथा नहीं। अतः एकादशी को अवश्य ही व्रत करना चाहिये। इस व्रत में शंख से जल नहीं पीना चाहिये। मछली, सूअर तथा अन्य निरामिष भोजन एकादशी के व्रत में वर्जित हैं। एकादशी व्रत का फल—हजार यज्ञों से भी अधिक है। ऐसा सुनकर अर्जुन ने कहा हे भगवान् ! आपने इस एकादशी के पुण्य को अनेक तीर्थों के पुण्य से श्रेष्ठ तथा पवित्र क्यों बतलाया है ? यह सब आप विस्तार पूर्वक कहिये। भगवान् बोले— हे अर्जुन ! सतयुग में एक महा भयङ्कर दैत्य हुआ था उसका नाम मुर था। उस दैत्य ने इन्द्र आदि देवताओं पर विजय प्राप्त कर उन्हें

उनके स्थान से गिरा दिया। तब देवेन्द्र ने महादेवजी से प्रार्थना की हे शिव-शंकर ! हम सब देवता मुर दैत्य के अत्याचारों से दुःखित हो मृत्युलोक में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अन्य देवताओं की हालत का तो मैं वर्णन ही नहीं कर सकता। आप कृपा कर इस महान् दुःख से छूटने का उपाय बतलाइये। शंकरजी बोले हे देवेन्द्र ! आप विष्णु भगवान के पास जाइये। इन्द्र तथा अन्य देवता महादेवजी के वचनों को सुनकर क्षीर सागर गये, जहाँ पर भगवान विष्णु शेषशय्या पर शयन कर रहे थे। भगवान को शयन करते देखकर देवताओं सहित इन्द्र ने स्तुति की कि हे देवताओं के देव, आप स्तुति करने योग्य हैं, आपको बारम्बार प्रणाम है। हे दैत्यों के संहारक ! हे मधुसूदन ! आप हमारी रक्षा करें। हे जगन्नाथ ! समस्त देव दैत्यों से

भयभीत होकर हम आपकी शरण में आये हैं।

इस समय दैत्यों ने हमें स्वर्ग से निकाल दिया है और हम सब देवता पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। अब आप ही हमारी रक्षा कीजिये ! रक्षा कीजिये ! देवताओं के द्वारा करुणापूर्ण वाणी को सुनकर श्रीविष्णु भगवान् बोले—हे देवताओं ! वह कौन सा दैत्य है जिसने देवताओं को जीत लिया है ? भगवान के उस अमृत रूपी वचनों को सुनकर इन्द्र बोले—हे भगवान ! प्राचीन समय में नाड़ी जंगम् नाम का एक दैत्य था। उस दैत्य की ब्रह्म वंश में उत्पत्ति हुई थी उसी दैत्य के पुत्र का नाम मुर है। उसकी राजधानी चन्द्रावती है। उस चन्द्रावती नगरी में वह मुर नामक दैत्य निवास करता है। जिसने अपने बल से समस्त विश्व को जीत लिया है और सब देवताओं को देवलोक



से निकाल कर, उसने अपने दैत्य कुल के इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण, चन्द्रमा, सूर्य आदि लोकपाल बनाये हैं। वह स्वयं सूर्य बनकर पृथ्वी को तापता है और स्वयं मेघ बनकर जल की वर्षा करता है। अतः आप उस बलशाली भयानक दैत्य को मारकर देवताओं की रक्षा करें।

इन्द्र के ऐसे वचन सुनकर श्री विष्णु भगवान बोले—देवताओं ! मैं तुम्हारे शत्रुओं का शीघ्र ही संहार करूँगा। अब आप उस चन्द्रावती नगरी को चलिए। इस प्रकार भगवान विष्णु देवताओं के साथ चल दिये। उस समय दैत्यपति मुर अनेकों दैत्यों के साथ युद्ध भूमि में गरज रहा था। युद्ध प्रारम्भ होने पर असंख्य दानव अनेकों अस्त्रों-शस्त्रों को धारण कर देवताओं से युद्ध करने लगे। परन्तु देवता दैत्यों के आगे एक क्षण भी न ठहर सके। तब भगवान विष्णु भी युद्ध

भूमि में आ गये। जब दैत्यों ने भगवान विष्णु को युद्ध भूमि में देखा तो उन पर अस्त्रों-शस्त्रों का प्रहार करने लगे। भगवान भी चक्र और गदा से उनके अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट करने लगे। इस युद्ध में अनेकों दानव सदैव के लिये सो गये, परन्तु दैत्यों का राजा मुर भगवान के साथ निश्चल भाव से युद्ध करता रहा। भगवान विष्णु मुर को मारने के लिए जिन-जिन शस्त्रों का प्रयोग करते वे सब उसके तेज से नष्ट होकर उस पर पुष्पों के समान गिरने लगे। अनेक अस्त्रों-शस्त्रों का प्रयोग करने पर भी भगवान उसको न जीत सके। वह आपस में मल्ल युद्ध करने लगे। भगवान विष्णु उस दैत्य से देवताओं के लिए सहस्र वर्ष तक युद्ध करते रहे, परन्तु उस दैत्य को न जीत सके। अन्त में विष्णु शान्त होकर विश्राम करने की इच्छा से बद्रीकाश्रम

चले गये। उस समय अड़तीस कोस लम्बी एक द्वार वाली हेमवती नाम की एक गुफा में शयन करने की इच्छा से भगवान उसमें प्रवेश कर गये।

हे अर्जुन ! अतः मैंने उस गुफा में शयन किया। वह दैत्य भी मेरे पीछे-पीछे चला आया, तब मुझको शयन करता देखकर मारने को तैयार हो गया। वह दैत्य सोचने लगा कि यह मैं आज अपने चिर शत्रु को मारकर सदैव के लिए निष्कण्टक हो जाऊँगा। उसी समय मेरी देह से एक अत्यन्त सुन्दर कन्या दिव्य वस्त्र धारण करके उत्पन्न हुई और दैत्य के सामने आकर युद्ध करने लगी। तब वह दैत्य आश्चर्य के साथ सोचने लगा कि यह ऐसी बलवान कन्या कहाँ से उत्पन्न हुई ? वह दैत्य उस कन्या से लगातार यद्ध करता रहा, कुछ समय

बीतने पर उस कन्या ने क्रोध में आकर उस दैत्य के अस्त्र-शस्त्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उस कन्या ने उसका रथ तोड़ डाला तब तो वह दैत्य महान क्रोध करके उससे मल्लयुद्ध करने लगा। उस कन्या ने उसको धक्का मारकर मूर्छित कर दिया। उठने पर उसका सिर काट लिया। वह दैत्य सिर कटते ही पृथ्वी पर गिर गया और मृत्यु को प्राप्त हुआ। अन्य समस्त दानव भी ऐसा देखकर पाताल लोक को चले गये। जब भगवान विष्णु की निद्रा टूटी तो उस दैत्य को मरा देखकर अत्यन्त आश्चर्य करने लगे और विचारने लगे इस दैत्य को किसने मारा है ? तब वह कन्या भगवान से हाथ जोड़कर बोली, कि हे भगवान् ! यह दैत्य आपको मारने को तैयार था, तब मैंने आपके शरीर से उत्पन्न होकर इसका वध किया है। इस पर भगवान बोले—

हे कन्या ! तूने इसको मारा है अतः मैं तेरे ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तूने तीनों लोकों के देवताओं को सुखी किया है, इसलिये तू अपनी इच्छानुसार वरदान माँग। कन्या बोली—हे भगवान् ! मुझे यह वरदान दीजिये कि जो मेरा व्रत करे उसके समस्त पाप नष्ट हो जायें और अन्त में स्वर्गलोक को जाये और मेरे व्रत का आधाफल रात्रि को मिले और उसका आधाफल एक समय भोजन करने वाले को मिले। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक मेरे व्रत को करें वे निश्चय ही विष्णु लोक को प्राप्त करें। कृपा करके मुझे ऐसा ही वरदान दीजिये। जो मनुष्य मेरे दिन तथा रात्रि को एक बार भोजन करे वे धन-धान्य से भरपूर रहे। इस पर भगवान् विष्णु उस कन्या से बोले—हे कल्याणी ! ऐसा ही होगा। मेरे और तेरे भक्त एक ही होंगे और अन्त में संसार में

प्रसिद्धि को प्राप्त होकर मेरे लोक को प्राप्त करेंगे। हे कन्या तू एकादशी को पैदा हुई है इसलिये तेरा नाम भी एकादशी हुआ। जो मनुष्य इस दिन व्रत करेंगे उनके समस्त पाप जड़ से नष्ट हो जायेंगे और अन्त में मुक्ति को प्राप्त करेंगे। तू मेरे लिये अब तीज, आठें, नौमी, और चौदस से भी अधिक प्रिय है। तेरे व्रत का फल सब तीर्थों के फल से भी महान होगा। यह मेरा कथन सत्य है। ऐसा कहकर, भगवान् उसी स्थान पर अन्तर्ध्यान हो गये। एकादशी भी भगवान् के उत्तम वचनों को सुनकर प्रसन्न हुई।

भगवान् बोले—हे अर्जुन ! सब तीर्थों, सब व्रतों के फल से एकादशी व्रत का फल सर्वश्रेष्ठ है। मैं एकादशी व्रत करने वाले मनुष्यों के शत्रुओं को नष्ट कर देता हूँ और उन्हें मोक्ष देता हूँ। उन मनुष्यों के

विघ्नों को मैं स्वयं ही नष्ट कर देता हूँ। हे अर्जुन ! यह मैंने तुमसे एकादशी की उत्पत्ति के बारे में बतलाया है। एकादशी व्रत समस्त पापों का नष्ट करने वाला और सिद्धि को देने वाला है। उत्तम मनुष्यों को दोनों पक्षों की एकादशियों को समान समझना चाहिये। उनमें भेद-भाव मानना उचित नहीं है। जो मनुष्य एकादशी महात्म्य को श्रवण व पठन करते हैं, उन को अश्वमेध यज्ञ फल मिलता है।

### मोक्षदा एकादशी व्रत महात्म्य

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

श्री अर्जुन बोले— हे भगवान ! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। सबको सुख देने वाले हैं और जगत् के पितर हैं इसलिये मैं आपको

नमस्कार करता हूँ। हे देव ! आप सबके हितैषी हैं, कृपा कर मेरे एक संशय को दूर कीजिये। मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है उसका नाम क्या है। उस दिन कौन से देवता की पूजा की जाती है और उनकी विधि क्या है ? भगवान मेरे इन प्रश्नों का विस्तार सहित उत्तर देकर मेरे सन्देह को दूर कीजिये, बड़ी कृपा होगी। भगवान कृष्ण बोले—हे अर्जुन ! तुमने अत्यन्त उत्तम प्रश्न किया है इसलिये तुम्हारा यश संसार में फैलेगा तुम ध्यान पूर्वक सुनो। मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी अनेकों पापों को नष्ट करने वाली है। यह मोक्षदा के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्री दामोदर भगवान की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भक्ति पूर्वक करनी चाहिये। हे अर्जुन ! अब मैं एक पुराण की कथा कहता हूँ इस एकादशी के

व्रत के पुण्य के प्रभाव से नर्क में गये हुए माता, पिता, पुत्रादि को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसकी कथा इस प्रकार है, तुम ध्यान पूर्वक सुनो।

प्राचीन गोकुल नगर में वैखानस नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके राज्य में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। एक रात्रि को स्वप्न में राजा ने अपने पिता को नर्क में पड़ा देखा, उसको स्वप्न में देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और प्रातःकाल होते ही वह ब्राह्मणों का सामने अपनी सब स्वप्न कथा कहने लगा—हे ब्राह्मणों! रात्रि को स्वप्न में मैंने अपने पिता को नर्क में पड़ा देखा और उन्होंने मुझसे कहा है कि हे पुत्र! मैं अब नर्क भोग रहा हूँ मेरी यहाँ से मुक्ति कराओ। जब से मैंने उनके यह वचन सुने हैं तब से मुझे चैन

नहीं है। मुझे अब राज, सुख, ऐश्वर्य, हाथी, घोड़े, धन, स्त्री, पुत्र आदि कुछ भी सुखदायक प्रतीत नहीं होते हैं। अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? इस दुःख के कारण मेरा शरीर तप रहा है। आप लोग मुझे किसी प्रकार का तप, दान, व्रत आदि बतावें जिससे मेरे पिता को मुक्ति प्राप्त हो। राजा के ऐसे वचनों को सुनकर ब्राह्मण बोले—हे राजन्! यहाँ से समीप ही वर्तमान भूत भविष्य के ज्ञाता एक 'पर्वत' नाम के मुनि हैं। आप यह सब बातें उनसे जाकर पूछ लीजिये, वे आपको इसकी विधि बता देंगे।

राजा ऐसा सुनकर मुनि के आश्रम पर गये। उस आश्रम में अनेकों शान्त चित्त योगी और मुनि तपस्या कर रहे थे। उस समय चारों वेदों के ज्ञाता पर्वत मुनि दूसरे ब्रह्मा के समान बैठे थे। राजा ने जाकर

उनको साष्टांग प्रणाम किया। पर्वत मुनि ने कुशलक्षेम पूछी। तब राजा बोले—हे देवर्षि ! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल हैं परन्तु अकस्मात् एक विघ्न आ गया है जिससे मुझे अशान्ति हो रही है। अब आप कृपा करके मेरे इस संशय को दूर कीजिये। ऐसा सुनकर पर्वत मुनि ने एक मुहूर्त के लिए नेत्र बन्द कर लिए और भूत भविष्य को विचारने लगे। फिर बोले—हे राजन् ! मैंने योगबल के द्वारा तुम्हारे पिता के समस्त कुकर्मों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उन्होंने पूर्व जन्म में कामातुर होकर सौत कहने पर अपनी दूसरी रानी को ऋतुदान माँगने पर भी नहीं दिया। उसी पाप कर्म के फल से तुम्हारा पिता नर्क में गया है।

तब राजा बोले कि हे भगवान् ! मेरे पिताजी के उद्धार के हेतु

आप कोई उपाय बतावें। तब पर्वत मुनि बोले—हे राजन् ! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है उस एकादशी का आप उपवास करें और उस उपवास के पुण्य को अपने पिता का संकल्प करके छोड़ दें। उस एकादशी के पुण्य के प्रभाव से अवश्य ही आपके पिता की मुक्ति होगी। मुनि के वचनों को सुनकर राजा अपने राज्य को आया और कुटुम्ब सहित मोक्षदा एकादशी उपवास किया। उस उपवास के पुण्य को राजा ने अपने पिता को दे दिया अर्थात् संकल्प छोड़ दिया। उस पुण्य के प्रभाव से राजा के पिता को मुक्ति मिली और स्वर्ग में जाते हुए अपने पुत्र से बोला—हे पुत्र ! तेरा कल्याण हो, यह कहकर स्वर्ग चला गया।

मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी को जो व्रत

करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्गलोक को जाते हैं। इस व्रत से बढ़कर मोक्ष देने वाला दूसरा कोई भी व्रत नहीं है। इस कथा को सुनने व पढ़ने से बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। यह व्रत मोक्ष देने वाला चिन्तामणि के समान है।

### सफला एकादशी महात्म्य

पौष मास के कृष्णपक्ष की एकादशी

अर्जुन बोले—हे भगवान् ! पौष मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है, उस दिन कौन से देवता की पूजा होती है और उसकी विधि क्या है ? यह सब आप मुझे विस्तार पूर्वक समझाइये। श्रीकृष्ण भगवान बोले—हे अर्जुन ! प्रेम के कारण मैं तुम्हारे प्रश्नों

का विस्तार सहित उत्तर देता हूँ।

अब तुम इस एकादशी व्रत का महात्म्य सुनो—पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम सफला है। इस एकादशी के देवता नारायण हैं। इस एकादशी का पहिले लिखी विधि के अनुसार व्रत करना चाहिये और नारायणजी की सफला नाम की एकादशी में मुझे ऋतु के अनुकूल फल अर्पण करें। मनुष्य को पाँच सहस्र वर्ष तपस्या करने से जिस पुण्य का फल मिलता है, वह पुण्य भक्ति पूर्वक रात्रि जागरण सहित सफला एकादशी का व्रत करने से मिलता है।

हे अर्जुन ! अब तुम सफला एकादशी की कथा ध्यान पूर्वक सुनो। चम्पावती नगरी में एक महिष्मान नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा के चार पुत्र थे। उन पुत्रों में सबसे बड़ा लुम्पक, राजा

नाम का पुत्र महापापी था। वह हमेशा परस्त्री गमन तथा वेश्याओं के यहाँ अपने पिता का धन व्यय किया करता था। वह सदैव देवता, ब्राह्मण, वैष्णव आदि की निन्दा किया करता। जब उसके पिता को अपने बड़े पुत्र के बारे में ऐसे समाचार ज्ञात हुए तब उसने उसको अपने राज्य से निकाल दिया। जब लुम्पक सबके द्वारा त्याग दिया गया, तब वह सोचने लगा कि अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? अन्त में उसने रात्रि को पिता की नगरी में चोरी करने की ठानी। वह दिन में बाहर रहने लगा और रात को अपने पिता की नगरी में जाकर चोरी तथा अन्य बुरे कर्म करने लगा। रात्रि में वह जाकर नगर के निवासियों को मारता तथा कष्ट देता। कुछ ही दिनों में उसने सम्पूर्ण नगरी को समाप्त कर दिया। प्रातः उसे पहरेदार पकड़ने पर

भी राजा के भय से छोड़ देते थे। जिस वन में वह रहता था वह भगवान को बहुत प्रिय था। उस वन में एक बहुत पुराना पीपल का वृक्ष था तथा उस वन को सब लोग देवताओं का क्रीड़ास्थल मानते थे। इस जङ्गल में पीपल के वृक्ष के नीचे, महापापी लुम्पक रहता था। कुछ दिनों के बाद पौष माह के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन वह वस्त्रहीन होने के कारण शीत के मारे मूर्छित हो गया। शीत के कारण वह रात्रि को न सो सका और उसके हाथ-पैर जकड़ गये। उस दिन वह रात्रि बड़ी कठिनता से बीती परन्तु सूर्य नारायण के उदय होने पर भी उसकी मूर्छा न गई।

सफला एकादशी के मध्याह्न तक वह दुराचारी मूर्छित ही पड़ा रहा। जब सूर्य की गर्मी से उसे कुछ गर्मी मिली तब उसे होश आया



और अपने स्थान से उठकर गिरते-पड़ते वन में भोजन की खोज में चल पड़ा। उस दिन वह जीवों को मारने में असमर्थ था इसलिये जमीन पर गिरे हुये फलों को लेकर पीपल के वृक्ष के नीचे आया। तब तक सूर्य भगवान अस्ताचल को प्रस्थान कर गये। उस ने उन फलों को पीपल की जड़ के पास रख दिया और कहने लगा कि हे भगवान् ! इन फलों से आप ही तृप्त होंगे, ऐसा कहकर वह रोने लगा और रात्रि को उसे नींद न आई। उस महापापी के इस व्रत तथा रात्रि जागरण से भगवान अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसके समस्त पाप नष्ट हो गये। प्रातःकाल होते ही एक दिव्य रथ अनेकों सुन्दर वस्तु से सजा हुआ आया और उसके सामने खड़ा हो गया। इसी समय आकाशवाणी हुई कि हे राजपुत्र ! भगवान नारायण के प्रभाव

से तेरे समस्त पाप नष्ट हो गये हैं अब तू अपने पिता के पास जाकर राज्य प्राप्त कर। लुम्पक ने जब ऐसी आकाशवाणी सुनी तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और बोला हे भगवन ! आपकी जय हो। ऐसा कहता हुआ सुन्दर वस्त्रों को धारण करने लगा और अपने पिता के पास गया। उसने सम्पूर्ण कथा कह सुनाई और पिता ने उसको अपना राज्य सौंपकर वन का रास्ता लिया।

अब लुम्पक शास्त्रानुसार राज्य करने लगा उसकी स्त्री, पुत्र आदि भी नारायण के परम भक्त बन गये। वृद्धावस्था आने पर वह अपने पुत्र को गद्दी देकर भगवान का भजन करने के लिए वन में चला गया और अन्त में परमपद को प्राप्त हुआ।

## पुत्रदा एकादशी महात्म्य

पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

एक दिन अर्जुन ने पूछा—हे कृष्ण ! अब आप पौष माह के व्रत के बारे में समझाइये उस दिन कौन से देवता का पूजन होता है ? तथा उसकी विधि क्या है ?

इस पर श्रीकृष्ण बोले—हे राजन् ! पौष मास की शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम पुत्रदा है । इसका पूजन विधि से करना चाहिये । इस व्रत में नारायण भगवान की पूजा करनी चाहिये । संसार में पुत्रदा एकादशी व्रत के समान अन्य दूसरा व्रत नहीं है इसके पुण्य से मनुष्य की इच्छा और भगवान कोना है । इसकी एक कथा है, उसे सनो ।

३५ - एकादशी महात्म्य

भद्रावती नगरी में सुकेतुमान के नाम का एक राजा राज्य करता था । वह निःसन्तान था । उसकी स्त्री का नाम शैव्या था । वह सदैव निपुत्री होने के कारण चिन्तित रहती थी । उस पुत्रहीन राजा के पितर रो-रोकर पिंड लेते थे कि इसके बाद हमें कौन पिंड देगा । इधर राजा को भी बन्धु-बांधव, मन्त्री, मित्र, राज्य, हाथी, घोड़ा आदि से भी संतोष नहीं होता था, उसका एकमात्र कारण पुत्रहीन होना था । वह विचार करता था कि मेरे मरने पर मुझे कौन पिंड देगा । बिना पुत्र पितरों और देवताओं से उन्नृण नहीं हो सकते ? जिस घर में पुत्र न हो वहाँ सदैव अँधेरा ही रहता है । इस तरह राजा रात दिन इसी चिन्ता में लगा रहता । एक दिन राजा ने अपना शरीर त्याग देने की सोची, परन्तु विचार करने लगा आत्मघात करना महापाप है । राजा

इस तरह मन में विचार करके एक दिन छिपकर वन को चल दिया। राजा घोड़े पर सवार होकर वन पक्षियों और वृक्षों को देखने लगा। उसने वन में देखा कि मृग, बाघ, सूअर, सिंह, बन्दर, सर्प आदि भ्रमण कर रहे हैं। हाथी अपने बच्चों और हथिनियों के बीच में घूम रहे हैं। उस वन में राजा ने देखा कि कहीं तो सियार कर्कश शब्द कर रहे थे और कहीं मोर ध्वनि कर रहे हैं। वन के दृश्यों को देखकर राजा को सोच-विचार में दोपहर हो गयी। अब राजा को भूख और प्यास लगने लगी। वह सोचने लगा की मैंने अनेकों यज्ञ किये हैं और ब्राह्मणों को मधुर भोजन कराया है परन्तु फिर भी मुझे यह दुःख क्यों मिल रहा है।

राजा प्यास के कारण बहुत बैचैन होने लगा और पानी की तलाश

में आगे बढ़ा। कुछ ही आगे जाने पर उसे एक सरोवर मिला। उस सरोवर में कमल खिल रहे थे। उस सरोवर में सारस, हंस, मगरमच्छ आदि जलक्रीड़ा कर रहे थे। उस सरोवर के चारों तरफ मुनियों के आश्रम बने थे। उस समय राजा के दाहिने अङ्ग फड़कने लगे। राजा मन में प्रसन्न होकर सरोवर के किनारे बैठे हुये मुनियों को देखकर घोड़े से उतरा और दंडवत् करके उनके सम्मुख बैठ गया। राजा को देखकर मुनीश्वर बोले हे राजा ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं, तुम इस जगह कैसे आये हो, सो कहो। इस पर राजा ने उनसे पूछा—हे मुनीश्वरों ! आप कौन है ? और किसलिये यहाँ पधारे हैं ? तो मुनि बोले —हे राजन ! आज पुत्र की इच्छा करने वाले को उत्तम सन्तान देने वाली पुत्रदा एकादशी है। हम लोग विश्वदेव हैं। और इस सरोवर

पर स्नान करने आये हैं। इस पर राजा बोला हे मुनीश्वर ! मेरे भी कोई पुत्र नहीं है, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हो तो एक पुत्र का वरदान दीजिये। मुनि बोले—हे राजन् ! आज पुत्रदा एकादशी है और इसका व्रत करें। भगवान की कृपा से आपके अवश्य ही पुत्र होगा।

मुनि के वचनों के अनुसार राजा ने उस दिन पारायण किया और मुनियों को प्रणाम करके अपने महल को वापिस आया। रात्रि में रानी ने गर्भ को धारण किया और नौ माह के पश्चात् उसके उत्तम पुत्र रत्न पैदा हुआ। वह राजकुमार बड़ा होने पर अत्यन्त वीर, धनवान, यशस्वी और प्रजा पालक हुआ।

श्रीकृष्ण भगवान बोले राजन् ! पुत्र की प्राप्ति के लिए पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य इसका महात्म्य श्रवण

व पठन करते हैं उनको स्वर्ग मिलता है।

### षटतिला एकादशी महात्म्य

माघ मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी

एक समय दालम्भ ऋषि ने पुलस्त्य ऋषि से पूछा हे मुनीश्वर ! मनुष्य मृत्युलोक में ब्रह्म हत्या आदि महान् पाप करते हैं और दूसरे के धन की चोरी करते हैं तथा दूसरे की उन्नति देखकर ईर्ष्या आदि करते हैं परन्तु फिर भी उनको नर्क प्राप्त नहीं होता सो क्या कारण है ? वह न जाने कौन सा अल्पदान या अल्प परिश्रम करते हैं जिनसे उनके पाप नष्ट हो जाते हैं। यह सब आप कृपा पूर्वक कहिये। इस पर पुलस्त्य महात्मा बोले—मुनि ! आपने मुझसे अत्यन्त गम्भीर प्रश्न पूछा

है। इससे संसारी जनों को बहुत लाभ होगा। इसको इन्द्र आदि देव भी नहीं जानते परन्तु मैं आपको यह गुप्त भेद अवश्य ही बताता हूँ। माघ मास के आने पर मनुष्य को स्नान आदि से शुद्ध रहना चाहिये और इन्द्रियों को वश में करके तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अभिमान आदि का स्मरण नहीं करना चाहिये। उसको हाथ पैर धोकर पुष्प नक्षत्र में गोबर, कपास, तिल मिलाकर उपले बनाना चाहिये। उन कंडों से 108 बार हवन करे और यदि उस दिन मूल नक्षत्र हो और द्वादशी हो तो नियम से रहे। स्नान आदि नित्य क्रिया से शुद्ध होकर भगवान का पूजन कीर्तन करना चाहिये। एकादशी के दिन व्रत करे और रात्रि को जागरण तथा हवन करे। उसके दूसरे दिन धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान की पूजा करे और खिचड़ी का भोग

लगाना चाहिये। उस दिन कृष्ण भगवान का पूजन करना चाहिये। उनको पेठा, नारियल, सीताफल या सुपारी सहित अर्घ्य देना चाहिये और फिर उनकी स्तुति इस प्रकार करनी चाहिये। हे भगवान ! आप अशरणों को शरण देने वाले हैं आप संसार में डूबे हुये का उद्धार करने वाले हैं। हे पुण्डरीकाक्ष ! हे कमलनेत्रधारी ! हे विश्व भगवान ! हे जगतगुरु ! आप लक्ष्मी जी सहित मेरे इस तुच्छ अर्घ्य को स्वीकार कीजिये। इसके पश्चात् ब्राह्मण को तिल दान करना चाहिये।

इस प्रकार मनुष्य जितने तिल दान करता है। वह उतने ही सहस्र वर्ष स्वर्ग में निवास करता है। 1-तिलस्नान 2-तिल की उबटन 3-तिलोदक 4-तिल का हवन 5-तिल का भोजन 6-तिल का दान, यह षटतिला कहलाती है। इससे अनेक प्रकार के पाप दूर हो जाते

हैं। एक दिन नारद ऋषि बोले—हे भगवान् ! आपको नमस्कार है। इस घटतिला एकादशी को क्या पुण्य होता है और उनकी क्या कथा है, सो कृपा पूर्वक कहिये।

श्री कृष्ण भगवान् बोले—हे नारद ! मैं तुमसे आँखों देखी सत्य घटना कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो। प्राचीन समय में मृत्युलोक में एक ब्राह्मणी रहती थी वह सदैव व्रत किया करती थी। एक समय वह एक माह तक व्रत करती रही इससे उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया। वह अत्यन्त बुद्धिमान थी। परन्तु फिर भी उसने कभी भी देवताओं तथा व्रतों से अपना मन अस्थिर नहीं किया। इस प्रकार मैंने सोचा कि ब्राह्मणी ने व्रत आदि से अपना शरीर शुद्ध कर लिया है और इसको वैष्णव लोक भी मिल जायेगा। परन्तु इसने कभी अन्नदान

नहीं किया है, इससे इसकी तृप्ति होना कठिन है। ऐसा सोचकर मैं मृत्यु लोक में गया और उस ब्राह्मणी से अन्न माँगा वह बोली—हे महाराज ! आप यहाँ किसलिए आये हैं, मैंने कहा मुझे भिक्षा चाहिये। इस पर उसने मुझे एक मिट्टी का पिंड दे दिया। मैं उसे लेकर स्वर्ग लौट आया। कुछ समय बीतने पर वह ब्राह्मणी भी शरीर त्यागकर स्वर्ग आई। मृत्पिंड के प्रभाव से उसे उस जगह एक आम वृक्ष सहित गृह मिला, परन्तु उसने गृह की अन्य वस्तुओं से शून्य पाया। वह घबड़ाई हुई मेरे पास आई और कहने लगी—हे भगवान् ! मैंने अनेकों व्रत आदि से आपकी पूजा की है। परन्तु फिर भी मेरा घर वस्तुओं से रहित है सो क्या कारण है ? मैंने कहा तुम अपने गृह को जाओ और देव-स्त्रियाँ तुम्हें देखने आयेंगी जब तुम उनसे घटतिला एकादशी

का पुण्य और विधि सुनलो तब ही द्वार खोलना ।

भगवान के ऐसे वचन सुनकर वह अपने घर को गई और जब देव स्त्रियाँ आईं और द्वार खुलवाने लगीं तब वह ब्राह्मणी बोली कि यदि आप मुझे देखने आई हैं तो षटतिला एकादशी का माहात्म्य कहिये । उनमें से एक देव स्त्री बोली सुनों में कहती हूँ । जब उसने षटतिला एकादशी का माहात्म्य सुना दिया, तब उसने द्वार खोला । देव स्त्रियों ने उसको सब स्त्रियों से अलग पाया । उस ब्राह्मणी ने भी देव स्त्रियों के कहे अनुसार षटतिला का व्रत किया और इसके प्रभाव से उसका गृह धनधान्य से भरपूर हो गया । अतः मनुष्यों को मूर्खता त्यागकर षटतिला एकादशी का व्रत करना चाहिये । इससे मनुष्यों को जन्म-जन्म में आरोग्यता प्राप्त हो जाती है । इस व्रत से

मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

### जया एकादशी महात्म्य

माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

श्रीकृष्ण भगवान बोले—हे राजन् ! माघ मास की शुक्ल पक्ष एकादशी का नाम जया है । इस एकादशी के व्रत से मनुष्य भूत, प्रेत, पिशाच आदि की योनि से छूट जाता है । अतः इस एकादशी के व्रत को विधि पूर्वक करना चाहिये । हे राजन् ! मैं एक पौराणिक कथा कहता हूँ, उसे सुनिये ।

एक समय इन्द्र स्वर्ग लोक में राज्य करता था । वहाँ अमृत का पान कर नन्द वन में अप्सराओं के साथ आनन्द पूर्वक क्रीड़ा करता

था। एक समय इन्द्र अपनी इच्छानुसार अप्सराओं के साथ रमण कर रहा था। उस जगह गन्धर्व गान कर रहे थे। वहाँ गन्धर्वों में प्रसिद्ध पुष्पदन्त तथा उसकी लड़की, चित्रसेन की स्त्री मलिन, ये सब थे। उस जगह मलिन का लड़का पुष्पवान् और उसका लड़का माल्यवान् था। उस समय पुष्पवती नामक एक गन्धर्व लड़की, माल्यवान् को देखकर उस पर मोहित हो गई और कामबाण से चलायमान होने लगी। उसने अपने रूप सौन्दर्य, हाव, भाव आदि के द्वारा माल्यवान् को वश में कर लिया। हे राजर्षि ! वह पुष्पवती अत्यन्त सुन्दर थी, उसके लक्षण अत्यन्त सुन्दर थे। पुष्पवती की ऐसी सुन्दरता को देखकर माल्यवान् भी उसके ऊपर मोहित हो गया। अतः ये दोनों कामदेव के वश में हो गये, परन्तु फिर भी इन्द्र के बुलाने पर नाच गाने

के लिये जाना पड़ा और अप्सराओं के साथ अपना गान शुरू किया। यद्यपि वह नाच गा रहे थे परन्तु कामदेव के प्रभाव से उसका मन न लगा और अशुद्ध गाने लगे। उनकी भाव भृङ्गियों को देखकर इन्द्र ने इनके प्रेम को समझ लिया और श्राप दे दिया कि मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले मूर्खों ! तुमने मेरा अपमान किया है इसलिए तुम स्त्री पुरुष के रूप में मृत्युलोक में जाकर पिशाच का रूप धारण करो और अपना कर्म फल भोगो।

इन्द्र का श्राप सुनकर वे अत्यन्त दुखी हुए और हिमालय पर पिशाच बनकर दुःखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। उन्हें गन्ध, रस, स्पर्श आदि का कुछ ज्ञान नहीं था। उस जगह महान् दुःख मिल रहे थे। रात-दिन में उन्हें एक क्षण भी निद्रा नहीं आती थी। उस स्थान



पर अत्यन्त सदी थी, जिसके कारण उनके रोमांच खड़े हो गये, उनके दांत भी सदी से कटकटा रहे थे। एक दिन पिशाच ने अपनी स्त्री से कहा—न मालूम हमने पिछले जन्म में कौन से पाप किये हैं, जिससे हमें इतनी दुःखदायी यह पिशाच योनि प्राप्त हुई है? पिशाच योनि से नर्क के दुःख सहना उत्तम है। इसी प्रकार अनेक विचारों के करते हुए अपना दिन व्यतीत करने लगे।

दैवयोग से एक दिन माघ मास के शुक्लपक्ष की जया नाम की एकादशी आई, उस दिन इन दोनों ने कुछ भी भोजन न किया और न कोई पाप कर्म ही किया। उस दिन केवल फल फूल खाकर दिन व्यतीत किया और महान् दुःख के साथ पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गये। उस समय सूर्य नारायण अस्ताचल को जा रहे थे। वह रात्रि

इन दोनों ने एक दूसरे से सटकर बड़ी कठिनता से काटी। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही भगवान के प्रभाव से इनकी देह छूट गई और अत्यन्त सुन्दर अप्सरा और गन्धर्व की देह धारण करके तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषण से अलंकृत होकर स्वर्ग लोक को चले गये। उस समय आकाश में देवगण तथा गन्धर्व उनकी स्तुति करने लगे।

नागलोक में जाकर इन दोनों ने देवराज इन्द्र को प्रणाम किया। इन्द्र को भी इनका अपने प्रथम रूप में देखकर महान आश्चर्य हुआ और इनसे पूछने लगे कि तुमने अपनी पिशाच देह से किस प्रकार छुटकारा पाया सो सब कहो। इस पर माल्यवान् बोले कि हे देवेन्द्र ! भगवान विष्णु के प्रभाव तथा जया एकादशी के व्रत के पुण्य से

था। एक समय इन्द्र अपनी इच्छानुसार अप्सराओं के साथ रमण कर रहा था। उस जगह गन्धर्व गान कर रहे थे। वहाँ गन्धर्वों में प्रसिद्ध पुष्पदन्त तथा उसकी लड़की, चित्रसेन की स्त्री मलिन, ये सब थे। उस जगह मलिन का लड़का पुष्पवान् और उसका लड़का माल्यवान् था। उस समय पुष्पवती नामक एक गन्धर्व लड़की, माल्यवान् को देखकर उस पर मोहित हो गई और कामबाण से चलायमान होने लगी। उसने अपने रूप सौन्दर्य, हाव, भाव आदि के द्वारा माल्यवान् को वश में कर लिया। हे राजर्षि ! वह पुष्पवती अत्यन्त सुन्दर थी, उसके लक्षण अत्यन्त सुन्दर थे। पुष्पवती की ऐसी सुन्दरता को देखकर माल्यवान् भी उसके ऊपर मोहित हो गया। अतः ये दोनों कामदेव के वश में हो गये, परन्तु फिर भी इन्द्र के बुलाने पर नाच गाने

के लिये जाना पड़ा और अप्सराओं के साथ अपना गान शुरू किया। यद्यपि वह नाच गा रहे थे परन्तु कामदेव के प्रभाव से उसका मन न लगा और अशुद्ध गाने लगे। उनकी भाव भृङ्गियों को देखकर इन्द्र ने इनके प्रेम को समझ लिया और श्राप दे दिया कि मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले मूर्खों ! तुमने मेरा अपमान किया है इसलिए तुम स्त्री पुरुष के रूप में मृत्युलोक में जाकर पिशाच का रूप धारण करो और अपना कर्म फल भोगो।

इन्द्र का श्राप सुनकर वे अत्यन्त दुखी हुए और हिमालय पर पिशाच बनकर दुःखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। उन्हें गन्ध, रस, स्पर्श आदि का कुछ ज्ञान नहीं था। उस जगह महान् दुःख मिल रहे थे। रात-दिन में उन्हें एक क्षण भी निद्रा नहीं आती थी। उस स्थान

पर अत्यन्त सदी थी, जिसके कारण उनके रोमांच खड़े हो गये, उनके दांत भी सदी से कटकटा रहे थे। एक दिन पिशाच ने अपनी स्त्री से कहा—न मालूम हमने पिछले जन्म में कौन से पाप किये हैं, जिससे हमें इतनी दुःखदायी यह पिशाच योनि प्राप्त हुई है? पिशाच योनि से नर्क के दुःख सहना उत्तम है। इसी प्रकार अनेक विचारों के करते हुए अपना दिन व्यतीत करने लगे।

दैवयोग से एक दिन माघ मास के शुक्लपक्ष की जया नाम की एकादशी आई, उस दिन इन दोनों ने कुछ भी भोजन न किया और न कोई पाप कर्म ही किया। उस दिन केवल फल फूल खाकर दिन व्यतीत किया और महान् दुःख के साथ पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गये। उस समय सूर्य नारायण अस्ताचल को जा रहे थे। वह रात्रि

इन दोनों ने एक दूसरे से सटकर बड़ी कठिनता से काटी। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही भगवान के प्रभाव से इनकी देह छूट गई और अत्यन्त सुन्दर अप्सरा और गन्धर्व की देह धारण करके तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषण से अलंकृत होकर स्वर्ग लोक को चले गये। उस समय आकाश में देवगण तथा गन्धर्व उनकी स्तुति करने लगे।

नागलोक में जाकर इन दोनों ने देवराज इन्द्र को प्रणाम किया। इन्द्र को भी इनका अपने प्रथम रूप में देखकर महान आश्चर्य हुआ और इनसे पूछने लगे कि तुमने अपनी पिशाच देह से किस प्रकार छुटकारा पाया सो सब कहो। इस पर माल्यवान् बोले कि हे देवेन्द्र ! भगवान विष्णु के प्रभाव तथा जया एकादशी के व्रत के पुण्य से

हमारी पिशाच योनि छूटी है। इन्द्र बोले—हे माल्यवान ! एकादशी व्रत करने से तथा विष्णु के प्रभाव से तुम लोग पिशाच की देह को छोड़कर पवित्र हो गये हो और हम लोगों के भी वन्दनीय हो गये हो क्योंकि शिव तथा विष्णु भक्त हम लोगों के वन्दना करने योग्य हैं अतः आप धन्य हैं ! धन्य हैं ! अब तुम पुष्पवती के साथ जाकर विहार करो।

हे युधिष्ठिर ! इस जया एकादशी के व्रत करने से समस्त कुयोनि नष्ट हो जाती हैं। जिस मनुष्य ने इस एकादशी का व्रत किया है उसने मानों सब तप, यज्ञ, दान किये हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक जया एकादशी व्रत करते हैं वे अवश्य ही सहस्र वर्ष तक स्वर्ग में निवास करते हैं।

## विजया एकादशी महात्म्य

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है ? तथा उसकी विधि क्या है ? सो सब कृपा पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि राजन् ! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम विजया है। उसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य को विजय मिलती है। उस विजया एकादशी के महात्म्य के श्रवण व पठन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

एक समय देवर्षि नारद ने जगत पिता ब्रह्माजी से पूछा कि हे

ब्रह्माजी ! आप मुझे फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की विजया नामक एकादशी का व्रत विधान बतलाइये । ब्रह्माजी बोले कि नारद ! विजया एकादशी का व्रत प्राचीन तथा नवीन पापों को नष्ट करने वाला है । इस विजया एकादशी की विधि मैंने आज तक किसी से नहीं कही है । यह समस्त मनुष्यों को विजय प्रदान करती है ।

त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी को जब चौदह वर्ष के लिये वनवास हो गया तब वह श्री लक्ष्मणजी तथा माता जानकी सहित पंचवटी पर निवास करने लगे । उस जगह महापापी रावण ने श्री सीताजी का हरण किया । इस दुःखद समाचार से श्रीरामजी तथा लक्ष्मणजी अत्यन्त व्याकुल हुए और सीताजी की खोज में चल दिये । घमटे-घमटे वे मरणासन्न जटाय के पास जा पहुँचे । जटाय भी अपनी

समस्त कथा सुनाकर स्वर्गलोक को चला गया । कुछ आगे चलकर उसकी सुग्रीव के साथ मित्रता हो गई और बाली का वध किया । श्रीहनुमानजी ने लंका में जाकर सीताजी का पता लगाया और सीताजी से श्रीरामचन्द्रजी तथा सुग्रीव की मित्रता का वर्णन किया । वहाँ से लौट कर हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजी के पास आये और सब समाचार कहे । श्रीरामचन्द्रजी ने सुग्रीव की सम्पत्ति लेकर बानरों, भालुओं की सेना सहित लंका को प्रस्थान किया । जब श्रीरामचन्द्रजी समुद्र के किनारे पहुँच गये, तब उन्होंने महान अगाध, मगरमच्छों से युक्त, समुद्र को देखकर श्रीलक्ष्मणजी से कहा—हे लक्ष्मण ! इस महान अगाध, अनेकों जीवों से युक्त समुद्र को किस प्रकार पार कर सकेंगे ?

श्री लक्ष्मणजी बोले कि हे रामजी ! आप आदिपुरुष पुराण पुरुषोत्तम

हो; यहाँ से करीब आधा-योजन की दूरी पर कुमारी द्वीप में बकदालभ्य नाम के मुनि रहते हैं। उन्होंने अनेकों नाम के ब्रह्मा देखे हैं। आप उनके पास जाकर इसका उपाय पूछिये। लक्ष्मणजी के वचनों को सुनकर श्री रामचन्द्रजी बकदालभ्य ऋषि के पास गये और उनको प्रणाम करके बैठ गये। मुनि ने भी उनको मनुष्य का रूप धारण किये हुये पुरुष को पुरुषोत्तम समझा और उनसे पूछा—हे रामजी ! आप कहाँ से पधारे हैं। श्रीरामजी बोले कि हे महर्षि ! मैं अपनी सेना सहित यहाँ आया हूँ और राक्षसों को जीतने लंका जा रहा हूँ, आप कृपाकर समुद्र को पार करने का कोई उपाय बताइये। इसी के लिये मैं आपके पास आया हूँ। बकदालभ्य ऋषि बोले कि—हे रामजी ! मैं आपको एक उत्तम व्रत बतलाता हूँ। फाल्गुन मास के

कृष्णपक्ष की विजया एकादशी का व्रत करने से तुम समुद्र के अवश्य ही पार हो जाओगे और तुम्हारी विजय होगी। हे रामजी ! इस व्रत की विधि यह है, दशमी के दिन स्वर्ण, चाँदी, ताँबा या मिट्टी, किसी का एक कलश बनावें। उस घड़े को जल से भरकर तथा उस पर पंच पल्लव रखकर वेदिका पर स्थापित करें। उस कलश के नीचे सतनजा (सात अनाज मिले हुये) और ऊपर जौ रखें। उस पर श्री नारायण भगवान की स्वर्ण की प्रतिमा स्थापित करें। एकादशी के दिन स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि से भगवान की पूजा करें। उस समस्त दिन को भक्ति पूर्वक कलश के सामने व्यतीत करें और रात्रि को भी उसी तरह बैठे रहकर जागरण करना चाहिये। द्वादशी के दिन नदी या तालाब के किनारे

स्नान आदि से निवृत्त होकर उस कलश को ब्राह्मण को दे देना चाहिये । हे राम ! यदि तुम इस व्रत को सेनापतियों के साथ करोगे तो अवश्य ही विजयी होगे । श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि की आज्ञानुसार विधि पूर्वक विजया एकादशी व्रत किया और इसके प्रभाव से दैत्यों के ऊपर विजय पाई ।

अतः हे राजन् ! जो मनुष्य उस व्रत को विधि पूर्वक करेगा उसकी दोनों लोकों में विजय होगी । श्री ब्रह्माजी ने नारदजी से कहा था कि हे पुत्र ! जो इस व्रत का महात्म्य सुनता है, उसको बाजपेय यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है ।

## आमलकी एकादशी महात्म्य

फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

मान्धाताजी बोले कि हे वशिष्ठजी ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ऐसे व्रत की कथा कहो जिससे मेरा कल्याण हो । महर्षि वशिष्ठजी बोले कि हे राजन् ! सब व्रतों से उत्तम और अन्त में मोक्ष देने वाला, आमलकी एकादशी का वर्णन करता हूँ । यह फाल्गुन माह शुक्लपक्ष में होता है । इस व्रत के फल से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । इस व्रत का पुण्य एक हजार गौ दान के फल के बराबर है । मैं आपसे एक पौराणिक कथा कहता हूँ । उसे ध्यान पूर्वक सुनो ।

एक वैदिक नामक नगर था । उस नगर में ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्री, शूद्र, चारों वर्ण आनन्द पूर्वक रहते थे । नगर में सदैव वेद ध्वनि गूँजा

करती थी। उस जगह पापी, दुराचारी, नास्तिक आदि कोई न था। उस नगर में चैत्ररथ नामक चन्द्रवंशी राजा राज्य करता था। वह महान विद्वान तथा धार्मिक था, उस राज्य में कोई भी दरिद्र तथा कंजूस नहीं था। उस राज्य के सब निवासी विष्णु भक्त थे। वहाँ के निवासी वृद्ध से बालक तक, प्रत्येक एकादशी का व्रत करते थे।

एक समय फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की आमल नामक एकादशी आई। उस दिन राजा ने प्रजा तक, वृद्ध से बालक तक, सबने हर्ष सहित उस एकादशी का व्रत किया। राजा अपनी प्रजा के साथ मन्दिर में आकर कुम्भ स्थापित करके तथा धूप, दीप, नैवेद्य, पंचरत्न, छत्र आदि से धात्री का पूजन करने लगे। वे सब धात्री की इस प्रकार स्तुति करने लगे—हे धात्री ! तुम ब्रह्म स्वरूप हो। तुम ब्रह्माजी द्वारा

उत्पन्न हो और समस्त पापों को नष्ट करने वाली हो, तुमको नमस्कार है। अब तुम मेरा अर्घ्य स्वीकार करो। तुम श्री रामचन्द्रजी के द्वारा सम्मानित हो, मैं आपकी प्रार्थना करता हूँ। मेरे समस्त पापों का हरण करो।

उस देवालय में रात्रि को सबने जागरण किया रात्रि के समय उस जगह एक बहेलिया आया। वह महापापी तथा दुराचारी था। अपने कुटुम्ब का पालन वह जीव हिंसा करके करता था। वह भूख प्यास से अत्यन्त व्याकुल था, कुछ भोजन इच्छा से मन्दिर के एक कोने में बैठ गया। उस जगह विष्णु भगवान की कथा तथा एकादशी महात्म्य सुनने लगा। इस प्रकार उस बहेलिया ने समस्त रात्रि को अन्य लोगों के साथ जागरण कर व्यतीत की। प्रातःकाल होते ही सभी लोग अपने-



अपने घर गये। इसी प्रकार वह बहेलिया भी अपने घर चला गया और भोजन किया। कुछ समय बीतने के पश्चात् उस बहेलिये की मृत्यु हो गई और आमलकी एकादशी के व्रत तथा जागरण के प्रभाव से उसने एक राजा के यहाँ जन्म लिया। उसका नाम बसुरथ रखा गया। बड़ा होने पर वह चतुरङ्गिणी सेना सहित तथा धन धान्य से युक्त होकर दस सहस्र ग्रामों का पालन करने लगा। वह तेज में सूर्य के समान, क्रान्ति में चन्द्रमा के समान, वीरता में विष्णु भगवान के समान, और क्षमा में पृथ्वी के समान था। वह अत्यन्त धार्मिक, सत्यवादी, कर्मवीर और विष्णु भक्त था। वह प्रजा का समान भाव से पालन करता था। दान देना उसका नित्य का कर्तव्य था। एक दिन वह राजा शिकार खेलने के लिये गया। देवयोग से वन

में वह रास्ता भूल गया और दिशा ज्ञान न होने के कारण उसी वन में एक वृक्ष के नीचे सोता रहा। उसी समय पहाड़ी डाकू वहाँ आये और राजा को अकेला देखकर उस पर मारो-मारो का शब्द करके टूट पड़े। वह डाकू कहने लगे कि इस दुष्ट राजा ने हमारे माता-पिता, पुत्र-पौत्र आदि सम्बन्धियों को मारा है तथा देश से निकाल दिया। अतः इसे अब अवश्य मारना चाहिये, ऐसा कहकर वह डाकू राजा को मारने लगे और उस पर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र राजा के शरीर पर गिरते ही नष्ट हो जाते और राजा को पुष्पों के समान प्रतीत होते थे। उन डाकूओं के अस्त्र-शस्त्र उन पर उल्टा प्रहार करने लगे जिससे वे मूर्छित हो गये। उस समय राजा के शरीर से एक दिव्य देवी प्रकट हुई। वह देवी अत्यन्त सुन्दर थी

तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत थी। उसकी भृकुटी टेढ़ी थी। उसकी आँखों से लाल-लाल अग्नि निकल रही थी। वह उस समय दूसरे काल के समान प्रतीत होती थी। वह उन डाकूओं को मारने दौड़ी और समस्त डाकूओं को काल के गाल में पहुँचा दिया। जब राजा जगा तब इन डाकूओं को मरा हुआ देखकर सोचने लगा कि इन शत्रुओं को किसने मारा है। मेरा इस वन में कौन हितैषी रहता है, जब वह राजा ऐसा विचार कर रहा था, तब ही आकाशवाणी हुई, हे राजन् ! इस संसार में विष्णु भगवान के अतिरिक्त तेरी कौन रक्षा कर सकता है ! इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आ गया और सुख पूर्वक राज करने लगा।

महर्षि वशिष्ठ जी बोले—हे राजन् ! यह सब आमलकी एकादशी

के व्रत का प्रभाव था, जो मनुष्य एक आमलकी एकादशी का व्रत भी करते हैं वे प्रत्येक कार्य में सफल होते हैं और अन्त में विष्णु लोक को जाते हैं।

### पापमोचिनी एकादशी महात्म्य

चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले—हे भगवान ! अब आप चैत्रमास के कृष्णपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये। इस एकादशी का नाम क्या है ? इसमें कौन से देवता की पूजा की जाती है, तथा विधि क्या है ? सो सब विस्तार पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले—कि हे राजन् ! एक समय मान्धाता ने लोमष

ऋषि से पूछा था कि हे मुनि ! चैत्रमास के शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी विधि क्या है सो सब पूरी तरह से कहिये । लोमष ऋषि बोले कि—हे राजन् ! चैत्रमास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पाप मोचिनी है । उसके व्रत के प्रभाव से मनुष्यों के अनेक पाप नष्ट हो जाते हैं । इसकी कथा इस प्रकार है ।

प्राचीन काल में एक चैत्ररथ नामक वन था । उसमें अप्सरायें वास करती थीं । वहाँ हर समय वसन्त रहता था अर्थात् उस जगह सदैव प्रत्येक तरह के पुष्प खिले रहते थे । उस जगह गन्धर्व कन्यायें विहार किया करती थीं । वन में इन्द्र अन्य देवताओं के साथ क्रीड़ा किया करते थे । उस वन में एक मेधावी नामक मुनि तपस्या करते थे । वे शिव भक्त थे । एक दिन मंजुघोषा नामक एक अप्सरा उनको मोहित

करने के लिए सितार बजा कर मधुर स्वर में गाने लगी । उस समय शिव के शत्रु अनङ्ग ( कामदेव ) भी शिव भक्त मेधावी मुनि को जीतने के लिये तैयार हुए । कामदेव ने उस सुन्दर अप्सरा के भ्रू का धुनष बनाया । कटाक्ष को उसकी प्रत्यंचा ( डोरी बनाई ) उसके नेत्रों को उस मंजुघोषा अप्सरा का सेनापति बनाया । इस तरह कामदेव अपने शत्रु भक्त को जीतने को तैयार हुआ ।

उस समय मेधावी मुनि भी युवा तथा हृष्ट-पुष्ट थे । उन्होंने यज्ञोपवीत तथा दंड धारण कर रखा था । वे दूसरे कामदेव के समान प्रतीत होते थे । उस मुनि को देखकर कामदेव के वश में हुई मंजुघोषा ने धीरे-धीरे मधुर वाणी से वीणा पर गाना शुरू किया तो मेधावी मुनि भी मंजुघोषा के मधुर गाने पर तथा उसके सौन्दर्य पर मोहित हो गये ।

वह अप्सरा उन मुनि को कामदेव से पीड़ित जानकर उनसे आलिंगन करने लगी। वह मुनि उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर शिव रहस्य को भूल गये और काम वशीभूत होकर उसके साथ रमण करने लगे। उस मुनि को काम के वशीभूत होने के कारण उस समय दिन रात्रि का कुछ भी ध्यान न रहा और बहुत समय तक रमण करते रहे। तदुपरान्त मंजुघोषा उस मुनि से बोली कि हे मुनि ! अब मुझे बहुत समय हो गया है अतः स्वर्ग जाने की आज्ञा दीजिये। उस अप्सरा के ऐसे वचनों को सुनकर मुनि बोले—हे सुन्दरी ! तू तो आज इसी संध्या को आई है, अभी प्रातःकाल तक ठहरो, मुनि के ऐसे वचनों को सुनकर अप्सरा उनके साथ रमण करने लगी और बहुत समय बिता दिया। फिर उसने मुनि से कहा कि हे देव ! अब आप मुझे

स्वर्ग जाने की आज्ञा दीजिये। मुनि बोले—अभी तो कुछ भी समय नहीं हुआ है, अभी कुछ देर ठहर। इस पर वह अप्सरा बोली—हे मुनि ! आपकी रात्रि तो बहुत लम्बी है। अब आप सोचिये कि मुझे आपके पास आये कितना समय हो गया। उस अप्सरा के वचनों को सुनकर मुनि को ज्ञान प्राप्त हुआ और वह समय का विचार करने लगे। जब रमण करने से उसका प्रमाण 57 साल 7 माह और 3 दिन ज्ञात हुआ तो वह उस अप्सरा को काल का रूप समझने लगे। वह अत्यंत क्रोधित हुए और उस तप नाश करने वाली अप्सरा की तरफ देखने लगे। उनके अधर काँपने लगे और इन्द्रियाँ व्याकुल होने लगीं। तब मुनि उस अप्सरा से बोले—रे दुष्टे ! मेरे तप को नष्ट करने वाली, तू अब मेरे श्राप से पिशाचनी हो जा। तू महान पापिन और

दुराचारिणी है, तुझे धिक्कार है।

उन मुनि के क्रोध युक्त श्राप से वह पिशाचनी हो गई, तब वह बोली—हे मुनि ! अब मुझ पर क्रोध को त्याग कर प्रसन्न हो जाओ और इस श्राप का निवारण कीजिये। विद्वानों ने कहा है, साधुओं की संगत अच्छा फल देने वाली है, इसलिए आपके साथ में मेरे तो बहुत वर्ष व्यतीत हुए हैं। अतः अब आप मुझ पर प्रसन्न हो जाइये। तब मुनि को कुछ शांति मिली और उस पिशाचिनी से बोले—री दुष्टे ! तूने मेरा बड़ा बुरा किया है परन्तु फिर भी मैं श्राप से छूटने का उपाय बतलाता हूँ। चैत्रमाह के कृष्णपक्ष की जो एकादशी है, उसका नाम पापमोचिनी है। उस एकादशी का व्रत करने से तू पिशाचिनी की देह से छूट जायगी। इस प्रकार मुनि ने उसको समस्त विधि बतला

दी और अपने पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पिता च्यवन ऋषि के पास गये। च्यवन ऋषि अपने पुत्र मेधावी को देखकर बोले—रे पुत्र ! यह तूने क्या किया ? तेरे समस्त तप नष्ट हो गये हैं ! मेधावी बोले—हे पिताजी ! मैंने बहुत बड़ा पाप किया है और आप उससे छूटने का उपाय बतलाइये। च्यवन ऋषि बोले—हे तात ! तुम चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पापमोचिनी नाम की एकादशी की विधि तथा भक्ति पूर्वक व्रत करो, इससे तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। पिता के वचनों को सुनकर मेधावी ऋषि ने पापमोचिनी एकादशी का विधि पूर्वक उपवास किया। उसके प्रभाव से उनके समस्त पाप नष्ट हो गये। मंजुघोषा अप्सरा भी पापमोचिनी एकादशी का व्रत करने से पिशाचिनी की देह से छूट गई और सुन्दर रूप धारण करके स्वर्ग

लोक चली गई।

लोमश मुनि बोले—हे राजन् ! इस पापमोचिनी एकादशी के प्रभाव से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी की कथा के श्रवण व पढ़ने से एक हजार गौदान करने का फल मिलता है। इस व्रत के करने से ब्रह्म हत्या करने वाले, स्वर्ण चुराने वाले, मद्यपान करने वाले, अगम्या गमन करने वाले आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक को जाते हैं।

### कामदा एकादशी महात्म्य

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान् ! आपको कोटि बार प्रणाम

है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपा कर चैत्रमास के शुक्लपक्ष की एकादशी का वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण भगवान् बोले—कि हे राजन् ! आप एक पुरानी कथा सुनिये, जिसको वशिष्ठजी ने राजा दिलीप से कही थी। राजा दिलीप ने पूछा कि गुरुदेव ! चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है ? उसमें किस देवता की पूजा होती है तथा उसकी विधि क्या है ? सो अब आप कृपा पूर्वक कहिये। महर्षि वशिष्ठजी बोले—हे राजन् ! चैत्रमास के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम कामदा है। यह पापों को नष्ट कर देती है जैसे अग्नि सूखे काष्ठ आदि को जलाकर नष्ट कर देती है। वैसे ही कामदा एकादशी के पुण्य के प्रभाव से पाप नष्ट हो जाते हैं और पुत्र की प्राप्ति होती है। इसके व्रत से कुयोनि छूट जाती है और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति

होती है। अब मैं इसका महात्म्य कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो।

प्राचीन काल में एक भोगीपुर नामक नगर था। वहाँ पर अनेक ऐश्वर्यों से युक्त पुण्डरीक नाम का एक राजा राज्य करता था। वहाँ अनेकों अप्सरा, गन्धर्व, किन्नर आदि वास करते थे। उसी जगह ललिता और ललित नाम के स्त्री-पुरुष अत्यन्त वैभवशाली घर में निवास करते हुये विहार किया करते थे। वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्रेम करते थे और अलग हो जाने पर व्याकुल हो जाते थे।

एक समय राजा पुण्डरीक गन्धर्व सहित सभा में शोभायमान थे। उस जगह ललित गन्धर्व भी उनके साथ गाना गा रहा था और उसकी प्रियतमा ललिता उस जगह नहीं थी। इससे वह उसको याद करने के कारण अशुद्ध गाना गाने लगा। नागराज कर्कोटक ने राजा पुण्डरीक

से इसकी शिकायत की इस पर राजा पुण्डरीक ने श्राप दे दिया कि अरे दुष्ट! तू मेरे सामने गाता हुआ भी अपनी स्त्री का स्मरण कर रहा है, इससे तू कच्चे माँस और मनुष्य को खाने वाला राक्षस होगा। तू महापापी है, अपने कर्म का अब तू फल भोग। राजा पुण्डरीक के श्राप से वह ललित गन्धर्व उसी समय एक विकराल राक्षस हो गया। उसका मुख भयानक हो गया। उसके नेत्र सूर्य, चन्द्र के समान प्रदीप्त होने लगे। मुँह से अग्नि निकलने लगी, उसकी नाक पर्वत की कन्दरा के समान विशाल हो गई और गर्दन पहाड़ के समान लगने लगी। उसके सिर के बाल पर्वत पर उगने वाले वृक्षों के समान दिखाई देने लगे। उस की भुजायें दो-दो योजन लम्बी हो गयीं। इस तरह उसका आठ योजन शरीर हो गया। राक्षस हो जाने पर उसको

महान दुःख मिलने लगा और अपने कर्म का फल भोगने लगा ।

जब ललिता को अपने प्रियतम ललित का ऐसा हाल मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई । वह सदैव अपने पति के उद्धार के लिये विचारने लगी कि मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ? वह राक्षस घोर वनों में रहने लगा और अनेक प्रकार के पाप करने लगा । उसकी स्त्री ललिता भी उसके पीछे-पीछे जाती और वह विलाप करती रहती । एक दिन वह अपने पति के पीछे घूमते-घूमते विन्ध्याचल पर्वत चली गई । उसने उस जगह श्रृङ्गी ऋषि का आश्रम देखा । वह शीघ्र ही उस आश्रम के पास गई और उस ऋषि के सन्मुख जाकर विनय करने लगी ।

उसे देखकर श्रृङ्गी ऋषि बोले कि, हे सुभगे । तुम कौन हो और

यहाँ किसलिये आई हो ? ललिता बोली—हे मुनि ! मैं वीरधन्वा नामक गन्धर्व की कन्या ललिता हूँ, मेरा पति राजा पुण्डरीक के श्राप से एक भयानक राक्षस हो गया है । उससे मुझको महान दुःख हो रहा है । आप उसे राक्षस योनि से छूटने का कोई श्रेष्ठ उपाय बतलाइये । तब श्रृङ्गी ऋषि बोले—अरी गन्धर्व कन्या ललिता अब चैत्र मास के शुक्लपक्ष की एकादशी आने वाली है, उसका नाम कामदा एकादशी है । उसके व्रत करने से मनुष्य के समस्त कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं । यदि तू उसके व्रत के पुण्य को अपने पति को देगी तो वह शीघ्र ही राक्षस योनि से छूट जायेगा और राजा का श्राप शान्त हो जायेगा ।

मुनि के ऐसे वचनों को सुनकर ललिता ने आनन्द पूर्वक उसका



व्रत किया और द्वादशी के दिन ब्राह्मणों के सामने अपने व्रत का फल अपने पति को दे दिया और भगवान से प्रार्थना करने लगी—हे प्रभो ! मैंने जो यह व्रत किया है, उसका फल मेरे पतिदेव को मिले जिससे उनकी राक्षस योनि शीघ्र ही छूट जाय । एकादशी का फल देते ही उसका पति राक्षस योनि से छूट गया और अपने पुराने स्वरूप को प्राप्त हुआ । वह अनेक सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर पहले की भाँति ललिता के साथ विहार करने लगा । कामदा एकादशी के प्रभाव से वह पहिले की भाँति अब अधिक सुन्दर हो गये और पुष्पक विमान पर बैठकर स्वर्गलोक को चले गये ।

हे राजन् ! इस व्रत को विधि पूर्वक करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । इसके व्रत से मनुष्य ब्रह्म इत्यादि के पाप और राक्षस आदि

की योनी से छूट जाते हैं । संसार में इससे महान कोई दूसरा व्रत नहीं है । इसकी कथा व महात्म्य के श्रवण व पठन से बाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

### बरूथनी एकादशी महात्म्य

वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान ! वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम तथा उसकी विधि क्या है, और उससे कौन से फल की प्राप्ति होती है, सो कृपा पूर्वक कहिये ।

श्रीकृष्ण भगवान बोले—हे राज राजेश्वर ! वैशाख मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम बरूथनी है । यह सौभाग्य को देने वाली है ।

इसके व्रत से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में सुख मिलता है। यदि इस व्रत को एक दुःखी स्त्री करती है तो उसे सौभाग्य मिलता है। बरूथनी के प्रभाव से ही राजा मान्धाता स्वर्ग को गया था। इसी प्रकार धुन्धुमार आदि भी स्वर्ग को गए थे। बरूथनी एकादशी के व्रत का फल दस सहस्र वर्ष तपस्या करने के फल के बराबर है। कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय जो एक बार स्वर्ण दान करने से फल मिलता है, वही फल बरूथनी एकादशी के व्रत करने से मिलता है। इस व्रत से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में सुख प्राप्त करते हैं व अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

हे राजन् ! इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य को इस लोक में सुख और परलोक में मुक्ति मिलती है। शास्त्रों में कहा है कि

हाथी का दान घोड़े के दान से अधिक उत्तम है और हाथी के दान से भूमि का दान उत्तम है, उससे उत्तम तिलों का दान है। तिल से स्वर्ण दान, स्वर्ण से अन्नदान श्रेष्ठ है। संसार में अन्नदान के बराबर कोई भी दान नहीं है। अन्नदान से पितृ, देवता, मनुष्य आदि सब तृप्त हो जाते हैं। शास्त्रों में कन्या दान इसके बराबर माना गया है। बरूथनी एकादशी के व्रत से अन्न तथा कन्या दान का फल मिलता है, जो मनुष्य लोभ के वश में होकर कन्या का धन ले लेते हैं, घे प्रलय के अन्त तक नरक में पड़े रहते हैं या उनको अगले जन्म में बिलाव का जन्म ग्रहण करना पड़ता है। जो मनुष्य प्रेम से एवं यज्ञ सहित कन्या दान करते हैं उनके पुण्य को चित्रगुप्त भी लिखने में असमर्थ हो जाते हैं। जो मनुष्य इस बरूथनी एकादशी का व्रत

करते हैं, उनको कन्यादान का फल मिलता है।

बरूथनी एकादशी का व्रत करने वाले को दशमी के दिन से निम्नलिखित दस वस्तुओं को त्याग देना चाहिये—

1. काँसे के बर्तन में भोजन करना, 2. माँस, 3. मसूर की दाल, 4. चना, 5. कोदों, 6. शाक, 7. मधु (शहद), 8. दूसरे का अन्न, 9. दूसरी बार भोजन करना, 10. स्त्री सङ्ग या अन्य किसी के साथ मैथुन करना।

उस दिन जूआ नहीं खेलना चाहिये तथा शयन नहीं करना चाहिए। उस दिन पान खाना, दाँतुन करना, दूसरे की निन्दा करना तथा चुगली करना और पापियों के साथ बातचीत भी नहीं करनी चाहिये। उस दिन क्रोध करना, झूठ बोलना त्याग देना चाहिये। इस व्रत में नमक,

तेल तथा अन्न वर्जित है।

हे राजन् ! जो मनुष्य इस एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करते हैं, उनको स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। अतः मनुष्य को पापों से डरना चाहिये और जो मनुष्य यमराज से डरते हैं, उनको इस बरूथनी एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करना चाहिये। इस व्रत के महात्म्य को पढ़ने से एक सहस्र गौदान का फल प्राप्त होता है। इसका फल गङ्गा स्नान करने के फल से भी अधिक है।

### मोहिनी एकादशी महात्म्य

बैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि—हे कृष्णजी ! बैशाख मास की शुक्लपक्ष

की एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी क्या विधि है ? यह सब विस्तार पूर्वक कहिये ।

श्रीकृष्ण भगवान् बोले—हे धर्मनन्दन ! मैं आपसे एक पुरातन कथा कहता हूँ, जिसको महर्षि वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजी से कहा था । श्रीरामचन्द्रजी बोले—हे गुरुदेव ! आप मुझे कोई ऐसा व्रत कहिये जिससे समस्त पाप और दुःख नष्ट हो जायें । मैंने जनकनन्दिनी श्री सीताजी के वियोग में बहुत दुःख भोगे हैं, अतः अब आप कोई व्रत बतलाइये ।

महर्षि वशिष्ठजी बोले—हे राम ! आपने बहुत सुन्दर प्रश्न किया है । आपकी बुद्धि अत्यन्त शुद्ध और पवित्र है । आपके नाम के स्मरण मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है, इसलिये आपका यह प्रश्न लोकहित से अवश्य आयेगा । वैशाख मास के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती

है, उसका नाम मोहिनी है । इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के समस्त पाप तथा दुःख कट जाते हैं । इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोह जाल से छूट जाता है, अतः हे राम ! इस एकादशी का व्रत दुःखी मनुष्यों की अवश्य ही करना चाहिये । मोहिनी एकादशी के व्रत में मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । अब आप इसकी कथा को ध्यान पूर्वक सुनिये ।

सरस्वती नदी के किनारे एक भद्रावती नाम की नगरी बसी हुई है । उस नगरी में सोम वंशीय धृत्मान नाम का एक राजा राज्य करता था । उसी नगरी में एक धन धान्य से पूर्ण, पुण्यवान् एक वैश्य रहता था । उसका नाम धनपाल था । वह अत्यन्त धर्मात्मा तथा विष्णु भक्त था । उसने नगर में अनेकों भोजनालय, प्याऊ, कुआँ तालाब, धर्मशाला

आदि बनवाये। उसने सड़कों के किनारे आम, जामुन, नीम आदि के वृक्ष लगवाये। उस वैश्य के पाँच पुत्र थे। उसका सबसे बड़ा पुत्र अत्यन्त पापी था। वह वेश्याओं और गुण्डों की संगति करता था। वह अपना समय जुआ खेलने में व्यतीत करता था। वह दूसरों की स्त्रियों के साथ भोग विलास करता था। वह महान नीच था और देवता, पितृ आदि को नहीं मानता था। वह अपने पिता के धन को बुरे व्यसनों में खर्च किया करता था। वह मद्यपान तथा माँस का भक्षण किया करता था। इस पर उसके पिता, भाइयों तथा कुटुम्बियों ने उसे घर से निकाल दिया और उसकी निन्दा करने लगे।

घर से निकलने के बाद वह अपने आभूषणों तथा वस्त्रों को बेचकर रहने लगा। धन नष्ट हो जाने पर वेश्याओं ने तथा गुण्डों ने भी उसका

साथ छोड़ दिया था। अब वह भूख और प्यास से दुःखी रहने लगा। अब उसने चोरी करने का विचार किया और रात्रि में चोरी करने लगा। एक दिन वह पकड़ा गया, परन्तु सिपाहियों ने वैश्य का पुत्र जानकर छोड़ दिया। वह दूसरी बार फिर पकड़ा गया और राजा ने उसे कारागार में बन्द कर दिया। कारागार में राजा ने उसको बहुत दुःख दिये और उसको नगर छोड़ने को कहा। अन्त में वह दुःखी होकर नगरी को छोड़ गया और जंगल में पशु पक्षियों को मार-मार कर खाने लगा। फिर बहेलिया बन गया और धनुष-बाण से पशुओं पक्षियों को मार-मार कर खाने लगा।

एक दिन वह पापी भूख और प्यास से व्याकुल खाने की खोज में निकल पड़ा और कोटिन्य ऋषि के आश्रम पर आ पहुँचा। इस

समय बैशाख का महीना था। कोटिन्य ऋषि गंगा स्नान करके आये थे। उनके भीगे वस्त्रों के छींटे मात्र से इस पापी को कुछ सुबुद्धि प्राप्ति हुई। वह पापी, मुनि के पास जाकर हाथ जोड़कर कहने लगा—हे मुनि ! मैंने अपने जीवन में पाप किये हैं, आप उन पापों से छूटने का कोई साधारण और बिना धन का उपाय बतलाइये। तब ऋषि बोले कि—तू ध्यान देकर सुन। तू वैशाख मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का व्रत कर। इस एकादशी का नाम मोहिनी है। इसके करने से तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। मुनि के वचनों को सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि की बतलाई हुई विधि के अनुसार उसने मोहिनी एकादशी का व्रत किया।

हे रामजी ! उस व्रत के प्रभाव से उसके समस्त पाप नष्ट हो गये

और अन्त में वह गरुड़ पर चढ़ कर विष्णु लोक को गया। इस व्रत से मोह आदि भी नष्ट हो जाते हैं। संसार में इस व्रत से अन्य कोई श्रेष्ठ व्रत नहीं है। इसके महात्म्य के श्रवण व पठन से जो पुण्य होता है, वह पुण्य एक सहस्र गौदान के पुण्य के बराबर है।

### अपरा एकादशी महात्म्य

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

श्री युधिष्ठिर बोले—कि हे भगवान् ! ज्येष्ठ मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उसका महात्म्य क्या है ? सो कृपा कर कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले—कि हे राजन् ! ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष

की एकादशी का नाम अपरा है। क्योंकि यह अपार धन देने वाली है। यह पुण्यों की देने वाली और पापों को नष्ट करने वाली है। जो मनुष्य इसका व्रत करते हैं, उनकी लोक में प्रसिद्धि होती है।

अपरा एकादशी के व्रत के प्रभाव से ब्रह्म हत्या, भूत योनि, दूसरे की निन्दा आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके व्रत से पर स्त्री के साथ भोग करने वालों के पाप नष्ट-हो जाते हैं, झूठी गवाही, असत्य भाषण, झूठा वेद पढ़ना, झूठा शास्त्र बनाना, ज्योतिषी, झूठा वैद्य आदि सबके पाप अपरा एकादशी के व्रत से नष्ट हो जाते हैं। जो क्षत्री युद्ध क्षेत्र से भाग जाय तो वह नरक को जाते हैं परन्तु अपरा एकादशी को व्रत करने से उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो शिष्य गुरु से विद्या ग्रहण करते हैं, परन्तु बाद में उनकी निन्दा करते

हैं तो वह अवश्य ही नरक में जाते हैं। वह भी अपरा एकादशी का व्रत करने से स्वर्ग को चले जाते हैं।

जो फल तीनों पुष्करों में स्नान करने से या कार्तिक मास में स्नान करने से अथवा गंगाजी के तट पर पितरों को पिंड दान करने से मिलता है, वह फल अपरा एकादशी का व्रत करने से मिलता है। सिंह राशि वालों को बृहस्पति के दिन गोमती में स्नान, करने से कुम्भ में श्रीकेदारनाथजी के दर्शन करने से तथा बद्रीकाश्रम में रहने से तथा सूर्य-चन्द्र ग्रहण में कुरुक्षेत्र में स्नान करने से जो फल मिलता है, वह फल अपरा एकादशी के व्रत के बराबर है।

हाथी घोड़े के दान से तथा यज्ञ में स्वर्ण दान से जो फल मिलता है, वह फल अपरा के व्रत के फल के बराबर है। गौ व भूमि या

स्वर्ण के दान का फल भी इसके फल के बराबर होता है। यह व्रत पाप रूपी वृक्षों के काटने को कुल्हाड़ी के समान है।

यह अपरा का व्रत पाप रूपी अन्धकार के लिये सूर्य के समान है। अतः मनुष्य को एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। यह व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ है। अपरा एकादशी के दिन भक्ति पूर्वक विष्णु भगवान का पूजन करना चाहिये। जिससे अन्त में विष्णु पद की प्राप्ति होती है।

हे राजन् ! मैंने यह अपरा एकादशी की कथा लोकहित के लिये कही है। इसके पढ़ने व सुनने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

## निर्जला एकादशी महात्म्य

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

श्रीभीमसेन बोले—कि हे पितामह ! भ्राता युधिष्ठिर, माता कुन्ती, द्रोपदी, अर्जन, नकुल और सहदेव आदि एकादशी के दिन व्रत करते हैं और मुझसे एकादशी के दिन अन्न खाने को मना करते हैं। मैं उनसे कहता हूँ कि भाई मैं भक्ति पूर्वक भगवान की पूजा कर सकता हूँ और दान दे सकता हूँ, परन्तु मैं एकादशी के दिन भूखा नहीं रह सकता। इस पर व्यास जी बोले—हे भीमसेन ! यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो, तो प्रत्येक मास की दोनों एकादशियों को अन्न न खाया करो। इस पर भीमसेन बोला—हे पितामह,



आपसे प्रथम कह चुका हूँ कि मैं एक दिन एक समय भी भोजन किये बिना नहीं रह सकता फिर मेरे लिये पूरे दिन का उपवास करना तो कठिन है। मेरे पेट में अग्नि का वास है, जो अधिक अन्न खाने पर शान्ति होती है। यदि मैं प्रयत्न करूँ तो वर्ष में एक व्रत अवश्य कर सकता हूँ। अतः आप मुझे कोई एक ऐसा व्रत बतलाइये, जिससे मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो सके।

श्रीव्यासजी बोले कि हे वायु पुत्र ! बड़े-बड़े ऋषि और महर्षियों ने बहुत से शास्त्र आदि बनाये हैं। यदि कलियुग में मनुष्य उन पर आचरण करे तो अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त होता है। उनमें धन बहुत कम खर्च होता है। उनमें से जो पुराणों का सार है, उसको कहता हूँ कि मनुष्य को दोनों पक्षों की एकादशियों का व्रत करना चाहिये।

इससे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

श्रीव्यासजी बोले—हे भीमसेन ! कृष्ण और मिथुन संक्रांति के मध्य में ज्येष्ठ मास की शुक्लपक्ष की एकादशी होती है, उसका निर्जल व्रत करना चाहिये। इस एकादशी के व्रत में स्नान और आचमन में जल वर्जित नहीं है लेकिन आचमन में 6 माशे जल से अधिक जल नहीं लेना चाहिये। इस आचमन से शरीर को शुद्धि हो जाती है। आचमन में 6 माशे से अधिक जल मद्यपान के समान है। इस दिन भोजन नहीं करना चाहिये। भोजन करने से व्रत नष्ट हो जाता है।

यदि सूर्योदय से सूर्यास्त तक मनुष्य जलपान न करे तो उससे बारह एकादशी के फल की प्राप्ति होती है। द्वादशी के दिन सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिये। इसके पश्चात् भूखे ब्राह्मण को भोजन कराना

चाहिये। तत्पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिये। हे भीमसेन ! स्वयं भगवान ने मुझसे कहा था कि इस एकादशी का पुण्य समस्त तीर्थों और दान के बराबर है। एक दिन निर्जला रहने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य निर्जला एकादशी का व्रत करते हैं, उनको मृत्यु के समय भयानक यमदूत नहीं दीखते। वरन भगवान विष्णु के दूत स्वर्ग से आकर उसको पुष्पक विमान पर बिठा स्वर्ग को ले जाते हैं। संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है।

अतः यत्नपूर्वक इस एकादशी का निर्जल व्रत करना चाहिये। इस दिन 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय', इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये। इस दिन गौ दान करना चाहिये। इस एकादशी को भीमसेन या पांडव एकादशी भी कहते हैं। निर्जल व्रत करने से पहले भगवान

की पूजा करनी चाहिये और उनसे विनय करनी चाहिये कि हे भगवान् ! आज मैं निर्जला व्रत करता हूँ, इसके दूसरे दिन भोजन करूँगा। मैं इस व्रत को श्रद्धा पूर्वक करूँगा। उससे मेरे सब पाप नष्ट हो जायें। इस दिन एक बड़े वस्त्र से ढक कर स्वर्ण सहित दान करना चाहिये।

जो मनुष्य इस व्रत के अन्तराल में स्नान, तप आदि करते हैं, उनको करोड़ पल स्वर्ण दान का फल मिलता है। जो मनुष्य इस दिन यज्ञ-होमादि करते हैं उसका फल वर्णन भी नहीं हो सकता। इस निर्जला एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। जो मनुष्य इसी दिन अन्न खाते हैं, उनको चाण्डाल समझना चाहिये। वे अन्त में नरक में जाते हैं। ब्रह्म हत्यारे, मद्य पान करने वाले, चोरी करने वाले, गुरु से द्वेष करने वाले, असत्य बोलने वाले इस व्रत को करने से

स्वर्ग को जाते हैं।

हे कुन्ती ! जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को श्रद्धा पूर्वक करते हैं, उनके निम्नलिखित कर्त्तव्य हैं, उन्हें सर्व-प्रथम विष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात् गौदान करना चाहिये। उस दिन ब्राह्मणों को दक्षिणा, मिष्ठान आदि देना चाहिये। निर्जला के दिन अन्न, वस्त्र, छत्र, उपाहन आदि का दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस कथा को प्रेम पूर्वक सुनते व पढ़ते हैं। उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

### योगिनी एकादशी महात्म्य

आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले—कि हे जनार्दन ! मैंने ज्येष्ठ मास में शुक्ल

पक्ष के निर्जला एकादशी की कथा सुनी। अब आप कृपा करके आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा वर्णन कीजिये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा महात्म्य क्या है ? सो सब वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण भगवान बोले कि—हे राजन् ! आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाला है। हे राज राजेश्वर ! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। इसके व्रत से पाप नष्ट हो जाते हैं। आपसे पुराण में कही हुई कथा कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो।

अलकापुरी नाम की नगरी में एक कुबेर नाम का राजा राज्य करता था। वह शिव भक्त था। उसकी पूजा करने के लिये एक हेममाली

पुष्प लाया करता था। उसके विशालाक्षी नाम की अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प ले आया परन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर अपनी स्त्री के साथ रमण करने लगा और दोपहर तक न गया। जब राजा कुबेर को उसकी राह देखते-देखते दोपहर हो गयी तो उसने क्रोध पूर्वक अपने सेवकों को आज्ञा दी कि तुम लोग जाकर हेममाली का पता लगाओ कि वह अभी तक पुष्प क्यों नहीं लाया है। जब यक्षों ने उसका पता लगा लिया तो वह कुबेर के पास जाकर कहने लगे हे राजन्। वह माली अभी तक अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है। यक्षों की इस बात को सुनकर कुबेर ने हेममाली को बुलाने की आज्ञा दी। हेममाली राजा कुबेर के सन्मुख डर से काँपता हुआ उपस्थित हुआ। उसको देखकर

राजा कुबेर को अत्यन्त क्रोध आया और उसके ओठ फड़फड़ाने लगे। उसने कहा—रे पापी ! महानीच कामी ! तूने मेरे परम पूजनीय ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी का अनादर किया है। मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री का वियोग भोगेगा और मृत्यु लोक में जाकर कोढ़ी होगा।

कुबेर के श्राप से वह उसी क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी उसी समय उससे बिछुड़ गई, मृत्युलोक में आकर उसने महा दुःख भोगे। परन्तु शिवजी की भक्ति के प्रभाव से उनकी बुद्धि मलीन न हुई और पिछले जन्म की भी सुध रही। इसलिये वह अनेक दुःखों को भोगता हुआ तथा अपने पूर्व जन्म के कुकर्मों का स्मरण करता हुआ हिमालय पर्वत की तरफ चल दिया। वहाँ पर चलते-चलते मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम पर पहुँचा। वह ऋषि

अत्यन्त वृद्ध तथा तपशाली थे। वह दूसरे ब्रह्मा के समान प्रतीत हो रहे थे और उनका वह आश्रम ब्रह्मा की सभा के समान शोभा दे रहा था। उनको देखकर वह हेममाली वहाँ गया और उनको प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

उसको देखकर मार्कण्डेय ऋषि बोले कि तूने कौन से खोटे कर्म किये हैं, जिससे तू कोढ़ी हुआ और महान दुःख भोग रहा है। इस पर हेममाली बोला—हे मुनि ! मैं यमराज कुबेर का सेवक था। मेरा नाम हेममाली है। राजा की पूजा के लिये नित्य प्रति पुष्प लाया करता था। एक दिन अपनी स्त्री के साथ विहार करते-करते देर हो गई और दोपहर तक पुष्प लेकर न पहुँचा। उन्होंने मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग भोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बन

तथा दुःख भोग। इससे मैं कोढ़ी हो गया हूँ और महान दुःख भोग रहा हूँ। अतः आप कोई ऐसा उपाय बतलायें जिससे मेरी मुक्ति हो।

इस पर मार्कण्डेय ऋषि बोले—कि भाई ! तूने मेरे सम्मुख सत्य वचन कहे हैं। इसलिये मैं तेरे उद्धार के लिये एक व्रत बताता हूँ। यदि तू आषाढ़ मास के कृष्णपक्ष की योगिनी नामक एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करेगा तो तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। इस पर हेममाली बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि के वचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का विधि पूर्वक व्रत किया। इसके प्रभाव से वह फिर अपने पुराने रूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ विहार करने लगा।

हे राजन् ! इस योगिनी की कथा का फल अटूठासी सहस्र ब्राह्मणों के भोजन कराने के बराबर है। इसके व्रत से समस्त पाप दूर होते

हैं, और अन्त में स्वर्ग मिलता है।

## देवशयनी (पद्मा) एकादशी व्रत कथा

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान् ! आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है ? और उस दिन कौन से देवता की पूजा होती है। तथा उसकी विधि क्या है, सो विस्तार पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि राजन् ! एक समय नारदजी ने ब्रह्मा से यही प्रश्न पूछा था। तब ब्रह्माजी बोले कि नारद ! तुमने कलियुग जीवों के उद्धार के लिए सब से उत्तम प्रश्न किया है, क्योंकि एकादशी का व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते

१०३ - एकादशी महात्म्य

हैं। इस एकादशी का नाम पद्मा है। इसके व्रत करने से विष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं। मैं एक पौराणिक कथा कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो।

सूर्यवंशी मान्धाता नाम का एक राजा था। वह सत्यवादी महान् प्रतापी और चक्रवर्ती था। वह अपनी प्रजा का पुत्र की तरह पालन करता था। इसकी समस्त प्रजा धन-धान्य से परिपूर्ण थी और सदैव सुख पूर्वक रहती थी। उसके राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ता था।

एक समय राजा के राज्य में अकाल पड़ गया और प्रजा अन्न की कमी के कारण अत्यन्त दुःखी रहने लगी। राज्य में यज्ञ होना बन्द हो गये। एक दिन प्रजा राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगी कि हे राजन् ! समस्त विश्व की सृष्टि का मुख्य कारण वर्षा है। इसी वर्षा के अभाव से राज्य में अकाल पड़ गया है और अकाल से प्रजा

मर रही है। हे राजन् आप कोई ऐसा उपाय बतलाइये, जिससे हम लोगों का दुःख दूर हो। इस पर राजा मान्धाता बोला कि आप लोग ठीक कह रहे हैं। वर्षा के न होने से आप लोग बहुत दुःखी हैं। राजा के पापों के कारण ही प्रजा को दुःख भोगना पड़ता है। मैं बहुत सोच विचार कर रहा हूँ, फिर भी मुझे अपना कोई दोष नहीं दिखलाई दे रहा है। आप लोगों के दुःख को दूर करने के लिये मैं बहुत यत्न कर रहा हूँ।

ऐसा कह कर राजा मान्धाता भगवान की पूजा कर कुछ मुख्य व्यक्तियों को साथ लेकर वन को चल दिया। वहाँ वह ऋषियों के आश्रमों में घूमते-घूमते अन्त में ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा ऋषि के आश्रम पर पहुँचा। उस स्थान पर राजा रथ से उतरा और आश्रम में आया।

वहाँ मुनि अभी नित्य कर्म से निवृत्त हुए थे कि राजा ने उनके सम्मुख प्रणाम किया और मुनि ने उनको आशीर्वाद दिया, फिर राजा से बोले कि हे राजन् आप इस स्थान पर कैसे पधारे हैं, सो कहिये। राजा बोला—कि हे महर्षि! मेरे राज्य में तीन वर्ष से वर्षा नहीं हो रही है। इससे अकाल पड़ गया है और प्रजा दुःख भोग रही है। राजा के पापों के प्रभाव से ही प्रजा को कष्ट मिलता है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है। मैं धर्मानुसार राज्य करता हूँ, फिर यह अकाल कैसे पड़ गया है। इसका मुझे अभी तक पता न लग सका। अब मैं आपके पास इसी सन्देह की निवृत्ति के लिये आया हूँ। आप कृपा कर मेरे इस सन्देह को दूर कीजिये और प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिये कोई उपाय बतलाइये। इस पर वह ऋषि बोले हे राजन्! यह सतयुग

सब युगों में श्रेष्ठ है। इसमें धर्म के चारों चरण सम्मिलित हैं। इस युग में केवल ब्राह्मणों को ही तपस्या करना तथा वेद पढ़ने का अधिकार है। परन्तु आपके राज्य में एक शूद्र भी तपस्या कर रहा है। इसी दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। यदि आप प्रजा का भला चाहते हैं तो उस शूद्र को मार दीजिये। इस पर राजा बोले— हे मुनीश्वर मैं उस निरपराध तपस्या करने वाले शूद्र को नहीं मार सकता। आप इस दोष से छूटने का कोई अन्य उपाय बतलाइये। तब ऋषि बोले कि हे राजन् ! यदि तुम ऐसा ही चाहते हो तो आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की पद्मा नाम की एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा सुख पायेगी क्योंकि इस एकादशी का व्रत सिद्धियों को देने वाला है और उपद्रवों

को शान्त करने वाला है। मुनि के इन वचनों को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आया और विधि पूर्वक पद्मा एकादशी व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से राज्य में वर्षा हुई और मनुष्यों को सुख पहुँचा। इस एकादशी को देवशयनी एकादशी भी कहते हैं। इस व्रत के करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। अतः मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्यों को एकादशी का व्रत करना चाहिये। चातुर्मास्य व्रत भी इसी एकादशी के व्रत से शुरू किया जाता है।

### चातुर्मास्य व्रत की विधि

कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान् ! विष्णु भगवान का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है। सो सब कृपा पूर्वक कहिये श्रीकृष्ण



बोले कि राजन् अब मैं आपको विष्णु के शयन का व्रत कहता हूँ। अब आप ध्यान पूर्वक सुनिये।

जब सूर्य नारायण कर्क राशि में स्थित हों, तब विष्णु भगवान को शयन कराना चाहिये और सूर्य नारायण के तुला राशि में आने पर भगवान को उठाना चाहिये। लौंद (अधिक) माह के आने पर भी विधि इसी प्रकार रहती है। इस विधि से अन्य देवताओं को शयन न कराना चाहिये। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करना चाहिये। उस दिन विष्णु भगवान की प्रतिमा बनानी चाहिये और चातुर्मास्य व्रत नियम से करना चाहिये। सबसे प्रथम उस प्रतिमा को स्नान कराना चाहिये। फिर सफेद वस्त्रों को धारण कराकर तकियादार शैया पर शयन कराना चाहिये। उनको धूप,

दीप, नैवेद्यादि से पूजन कराना चाहिये। भगवान का पूजन शास्त्र ज्ञाता ब्राह्मणों के द्वारा कराना चाहिये, तत्पश्चात् भगवान विष्णु की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये।

हे भगवान् ! मैंने आपको शयन कराया है। आपके शयन से सम्पूर्ण विश्व सो जाता है। इस तरह विष्णु भगवान के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिये कि हे भगवान् ! आप जब चार मास तक शयन करें, तब तक मेरे इस चातुर्मास्य व्रत को निर्विघ्न रखें।

इस प्रकार विष्णु भगवान् की स्तुति करके शुद्ध भाव से मनुष्यों को दाँतुन आदि के नियम को ग्रहण करना चाहिये। विष्णु भगवान के व्रत को शुरू करने के पाँच काल वर्णन किये हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्थानी एकादशी तक चातुर्मास्य व्रत को करना

चाहिये। द्वादशी, पूर्णमाशी, अष्टमी या संक्रान्ति को व्रत प्रारम्भ करना चाहिये और कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिये। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस व्रत को प्रति वर्ष करते हैं, वह सूर्य के समान देदीप्यमान विमान पर बैठकर विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन्! अब आप इसमें दान का पृथक्-पृथक् फल सुनें।

जो मनुष्य देव मन्दिरों में रंगीन बेल बूटे बनाता है, उसे सात जन्म तक ब्राह्मण की योनि मिलती है। जो मनुष्य चातुर्मास्य के दिनों में विष्णु भगवान को दही, दूध, घी, शहद और मिश्री के द्वारा स्नान कराता है, वह वैभवशाली होकर सुख भोगता है। जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक भूमि, स्वर्ण दक्षिणा आदि ब्राह्मणों को देता है, वह स्वर्ग में

जाकर इन्द्र के समान सुख भोगता है। जो विष्णु भगवान की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से भगवान की पूजा करता है। वह इन्द्र लोक में जाकर अक्षय सुख भोगता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य के अन्दर नित्य प्रति तुलसीजी भगवान को अर्पित करता है, वह स्वर्ण के विमान पर बैठकर विष्णु लोक को जाता है। जो मनुष्य विष्णु भगवान की धूप-दीप से पूजा करते हैं, उनको अनन्त धन मिलता है। जो मनुष्य इस एकादशी से कार्तिक के महीने तक विष्णु की पूजा करते हैं, उनको विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। इस चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य संध्या के समय देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीप दान करते हैं तथा ब्राह्मणों को सोने के पात्र में वस्त्र देते हैं, वह विष्णु लोक को जाते हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान

के चरणामृत लेते हैं, वे इस संसार के आवागमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो विष्णु मन्दिर में नित्य प्रति 108 बार गायत्री मंत्र का जप करते हैं वे पापों में लिप्त नहीं होते। जो मनुष्य पुराण तथा धर्मशास्त्र को सुनते हैं और वेदपाठी ब्राह्मण को वस्त्रों का दान करते हैं वे दानी, धनी, ज्ञानी और कीर्तिमान होते हैं। जो मनुष्य भगवान या शिवजी का स्मरण करते हैं और अन्त में उनकी प्रतिमा दान करते हैं, वह पापों से रहित होकर गुणवान बनते हैं। जो मनुष्य सूर्य नारायण को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में गौ दान करते हैं, उनको पूरी आयु स्वस्थ देह प्राप्त होती है तथा कीर्ति, धन और बल पाते हैं। चातुर्मास्य में जो मनुष्य गायत्री मंत्र द्वारा तिल से होम करते हैं और चातुर्मास्य समाप्त हो जाने पर तिल का दान करते हैं; उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते

हैं और निरोग शरीर मिलता है तथा सुपात्र सन्तान होती है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में अन्न से होम करते हैं और समाप्त हो जाने पर घी, घड़ा और वस्त्रों का दान करते हैं, वे ऐश्वर्यशाली होते हैं।

जो मनुष्य तुलसीजी को धारण करते हैं तथा अन्त में विष्णु भगवान के निमित्त ब्राह्मणों को दान करते हैं, वह विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में भगवान के शयन के उपरान्त उनके मस्तक पर नित्य-प्रति दूध चढ़ाते हैं और अन्त में स्वर्ण की दूर्वादान करते हैं तथा दान देते समय जो इस प्रकार की स्तुति करते हैं कि हे दूर्वे ! जिस भाँति इस पृथ्वी पर शाखाओं सहित फैली हुई हो उसी प्रकार मुझे भी अजर अमर सन्तान दो, ऐसा करने वाले मनुष्य के सब पाप छूट जाते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। जो शिवजी या विष्णु

भगवान के देवालय में गान करते हैं, उन्हें रात्रि जागरण का फल मिलता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत करते हैं, उनको उत्तम ध्वनि वाला घण्टा दान करना चाहिये। इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये— हे भगवान ! हे जगत्पति ! आप पापों का नाश करने वाले हैं। आप मेरे योग्य कार्यो को न करने योग्य कार्यो को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं, उनको नष्ट कीजिये। चातुर्मास्य व्रत के अन्दर जो नित्य-प्रति ब्राह्मणों का चरणामृत पान करते हैं; वे समस्त पापों तथा दुःखों से छूट जाते हैं और आयुवान, लक्ष्मीवान होते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के समाप्त हो जाने के बाद ही गौ-दान करना चाहिये। यदि गौ-दान न कर सको तो वस्त्र दान अवश्य करना चाहिये। जो ब्राह्मणों को नित्य-प्रति नमस्कार करते हैं, उनका जीवन सफल हो

जाता है और समस्त पापों से छूट जाते हैं। चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति में जो ब्राह्मणों को भोजन कराता है उसकी आयु तथा धन में वृद्धि होती है। जो अलंकार सहित बछड़े वाली कपिला गाय वेदपाठी ब्राह्मणों को दान करते हैं, वे चक्रवर्ती आयुवान, पुत्रवान राजा होते हैं और स्वर्गलोक में प्रलय के अन्त तक इन्द्र के समान राज्य करते हैं। जो मनुष्य सूर्य भगवान तथा गणेशजी को नित्य नमस्कार करते हैं, उनकी आयु तथा लक्ष्मी बढ़ती है और यदि गणेशजी प्रसन्न हो जायें तो मनवांछित फल पाते हैं। गणेशजी और सूर्य की प्रतिमा ब्राह्मण को देने से सब कामों की सिद्धि होती है। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में महादेवजी की प्रसन्नता के लिये तिल और वस्त्रों के साथ ताँबे का पात्र दान करते हैं, उनके यहाँ स्वस्थ सुन्दर शिवभक्त सन्तान होती है।

चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति कर चाँदी पात्र या ताँबा-पात्र गुड़ और तिल के साथ दान करना चाहिये। जो मनुष्य विष्णु भगवान के शयन करने के उपरान्त यथाशक्ति वस्त्र और तिल के साथ स्वर्णदान करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मोक्ष प्राप्त होते हैं। चातुर्मास्य व्रत के समान होने पर शय्यादान करते हैं, उनको अक्षय सुख मिलता है और कुबेर के समान धनवान होते हैं। वर्षा ऋतु में जो गोपीचंदन देते हैं, उन पर भगवान प्रसन्न होते हैं। व्रत के समाप्त हो जाने पर इस प्रकार उद्यापन करना चाहिये:—चार छटाँक ( 250 ग्राम ) व आठ छटाँक ( 500 ग्राम ) वाले ताँबे के आठ पात्र या अड़तालीस छटाँक ( ढाई किलो ) का एक ताँबे का पात्र लेकर उसमें शक्कर भरकर तथा वस्त्र, फल, दक्षिणा

सहित ब्राह्मण को देना चाहिये। शक्कर सहित ताँबे का पात्र सूर्य को प्रिय है। इससे मनुष्य के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। उसके दान के प्रभाव से बलवान कीर्तिवान सन्तान उत्पन्न होती है।

हे कुन्ती पुत्र ! इस चातुर्मास्य व्रत को करने वाला मनुष्य गन्धर्व विद्या में निपुण और स्त्रियों को प्रिय होता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में ब्राह्मणों को शाक-फल आदि देते हैं और अन्त में यथाशक्ति दान-दक्षिणा, वस्त्र आदि देते हैं, वह सुखी राजयोगी बनते हैं। शाक और फल, देवता तथा मुनियों को प्रिय हैं। अतः उसके देने से देवता प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में प्रतिदिन सोंठ, मिर्च, पीपल और दक्षिणा के साथ दान करते हैं और व्रत के अन्त में स्वर्ण तथा सोंठ, मिर्च आदि दान देते हैं, वे सौ वर्ष तक जीते हैं और अन्त

में स्वर्ग को जाते हैं। जो तम्बाकू खाना छोड़ देते हैं, उनसे देवता प्रसन्न होते हैं और अनन्त धन देते हैं। इस व्रत में जो मनुष्य लक्ष्मी या पार्वती की प्रसन्नता के लिये हल्दी का दान करते हैं और अन्त में चाँदी के पात्र में हल्दी रखकर दान देते हैं, वे स्त्रियाँ अपने पति के साथ और पति अपनी स्त्री के साथ सुख भोगते हैं। इससे उन्हें सौभाग्य, अक्षय धन तथा सुपात्र सन्तान मिलती है और उनकी देवलोक में पूजा होती है। इस व्रत में जो मनुष्य शिवजी और पार्वती की पूजा करते हैं तथा दक्षिणा, वस्त्र, स्वर्ण आदि दान करते हैं और व्रत के शुरु में शिवलिंग की स्थापना करते हैं, गौ, बैल दान करते हैं और ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराते हैं, उन्हें सम्पत्ति और कीर्ति मिलती है और इस लोक में सुख भोग कर अन्त में शिवलोक को

जाते हैं। इस व्रत में वामन भगवान की प्रसन्नता के लिये ब्राह्मणों को दही से युक्त भात खिलाना चाहिये। यदि यह नित्य न हो सके तो अष्टमी, अमावस, पूर्णमासी और प्रत्येक रविवार या शुक्रवार को खिलाना चाहिये। ऐसा करने से इस लोक में धन-धान्य, पुत्र तथा विष्णु भक्ति मिलती है और अन्त में विष्णुलोक को जाते हैं। मनुष्य दान तथा आभूषण से युक्त बछड़ा सहित गौ का दान करते हैं। वह इस लोक में ज्ञान और किसी के सेवक नहीं बनते और अन्त में ब्रह्मलोक में जाकर पितरों के साथ सुख प्राप्त करते हैं।

चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य प्रजापत्य का व्रत करते हैं और इसके समाप्त में गौ दान करते हैं और ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, वह समस्त पापों से छूटकर ब्रह्मलोक को जाते हैं। इस व्रत में जो वस्त्र

और बैलों के साथ आठ हल दान करते हैं और शाक, मूल फल आहार करते हैं तथा पयोव्रत करते हैं, अन्त में दूध वाली गौ दान देते हैं, वह विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में केला के पत्र और पलास के पत्तों पर भोजन करते हैं तथा काँसे का पात्र और वस्त्र दान करते हैं, वे इस लोक में सुख पाते हैं। चातुर्मास्य व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण-घात करने वाला, सुरा पीने वाला, बालकों को मारने वाला, असत्य भाषण करने वाला, स्त्री को मारने वाला, किसी के व्रत को बिगाड़ने वाला, अगम्या गमन करने वाला, ब्राह्मणी तथा चाँडाली से गमन करने वाला, इन सबके पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में निर्वाण पद को पाते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के अन्त में जो मनुष्य ब्राह्मण को आभूषण युक्त

चन्दन सहित बैल का दान करते हैं तथा उसे घटरसयुक्त भोजन कराते हैं, उन्हें विष्णु लोक प्राप्त होता है। जो मनुष्य भगवान के शयन करने पर नित्य-प्रति रात्रि जागरण करते हैं तथा अन्त में ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, उन्हें शिवलोक की प्राप्ति होती है। चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य नित्यप्रति एक समय खाकर ही रहते हैं तथा अन्त में भूखे को भोजन कराते हैं। उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान की पूजा करते हैं, वह विष्णु लोक को जाते हैं। जो भगवान के शयन करने के बाद भूमि पर सोते हैं तथा अन्त में शय्यादान करते हैं, उनकी शिवलोक में पूजा होती है। चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य मैथुन नहीं करता, वह बलशाली, यशस्वी और लक्ष्मीवान् होता है तथा अन्त में स्वर्ग लोक को जाता है। जो मनुष्य इस व्रत में

उत्तम चावल या जौ का दान करते हैं, वह स्वर्ग को जाते हैं। चातुर्मास्य व्रत में जो तेल नहीं लगाता तथा अन्त में काँसे या मिट्टी के पात्र में तेल भरकर दान करता है, वह विष्णु लोक को जाता है। जो व्रत में शाक नहीं खाता और अन्त में दश प्रकार के शाक वेदपाठी ब्राह्मण को देता है, वह शिव लोक को जाकर ख्याति प्राप्त करता है। जो मनुष्य इस व्रत में गेहूँ को त्यागकर भोजन करते हैं तथा स्वर्ण का दान करते हैं, उन्हें अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस व्रत में अपनी इन्द्रियों का दमन करते हैं, उन्हें अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। जो मनुष्य श्रावण मास में शाक, भादों में दही, क्वार में दूध और कार्तिक में दाल को त्याग देते हैं, उन्हें निरोगी काया प्राप्त होती है। जो स्नान करके भगवान की पूजा

करते हैं, वह हरि लोक को जाते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में मीठा, खट्टा, कड़ुआ पदार्थ को त्याग देता है, वह समस्त दुर्गुणों से छूटकर स्वर्ग को जाता है। जो मनुष्य इस व्रत में चान्द्रायण व्रत करते हैं, वह स्वर्ग लोक को जाते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में एक मात्र दूध पर ही निर्वाह करते हैं, उनका वंश प्रलय के अन्त तक चलता है। जिस दिन भगवान शयन से उठते हैं, उस दिन ब्राह्मणों को दान, वस्त्र तथा भोजन देना चाहिये। यह समस्त दान वेदपाठी धार्मिक ब्राह्मण को देना चाहिये। चोरी करने वाला, मद्यपान करने वाला, अगम्या गमन करने वाला, मिथ्या बोलने वाला तथा अन्य त्याग्य करने वाले ब्राह्मणों को दान देने से उल्टा पाप लगता है तथा नर्क की प्राप्ति होती है।



## कामिका एकादशी महात्म्य

श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी

कुन्ती पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि, हे भगवन् ! मैंने आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का सविस्तार वर्णन सुना। अब आप मुझे श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। उस एकादशी का नाम क्या है ? तथा इसकी विधि क्या है इसमें कौन से देवता की पूजा होती है।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि, हे राजन् ! इस एकादशी की कथा कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो। एक समय इस एकादशी की पावन कथा को भीष्म पितामह ने लोकहित के लिए नारद जी से कहा था।

१२५ - एकादशी महात्म्य

एक समय नारदजी ने पूछा कि हे पितामह ! आज मेरी श्रावण के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनने की इच्छा है। अतः अब आप एकादशी की व्रत कथा विधि सहित सुनाइये। भीष्म पितामह नारद के वचनों को सुनकर बोले कि हे नारदजी ! आपने मुझसे अत्यन्त सुन्दर प्रश्न किया है। आप ध्यान लगाकर सुनिये।

श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम कामिका है। एकादशी की कथा के सुनने मात्र से ही बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। कामिका एकादशी के व्रत में शंख, चक्र, गदाधारी विष्णु भगवान की पूजा होती है। जो मनुष्य इस एकादशी की धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, उन्हें गंगा स्नान के फल से भी बड़ा फल मिलता है।

सूर्य या चन्द्र ग्रहण में केदार और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से जो पुण्य मिलता है, वह पुण्य विष्णु भगवान की भक्ति पूर्वक पूजा करने से मिल जाता है। श्रीविष्णु भगवान के पूजन का फल समुद्र और बन सहित पृथ्वी दान करने और सिंह राशि वालों को गोदावरी नदी में स्नान करने के फल से भी अधिक होता है। व्यतीपात में गण्डकी नदी में स्नान करने से जो फल मिलता है, वह फल भगवान की पूजा करने से मिलता है। संसार में भगवान की पूजा का फल सबसे अधिक है। भगवान की पूजा का फल श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी के फल के बराबर है। अतः भक्ति पूर्वक भगवान की पूजा न बन सके तो श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। आभूषणों से युक्त बछड़ा सहित गौ-

दान करने से जो फल मिलता है, वह फल कामिका एकादशी के व्रत से मिल जाता है।

जो उत्तम द्विज श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी का व्रत करते हैं तथा श्री विष्णु भगवान की पूजा करते हैं। उससे समस्त देव, नाग, किन्नर, पितृ आदि की पूजा होती है। इसलिये पापी से डरने वाले व्यक्तियों को विधि विधान सहित इस व्रत को करना चाहिये।

संसार सागर तथा पापों में फँसे हुये मनुष्यों को इनसे छूटने के लिये कामिका एकादशी का व्रत करना चाहिये। कामिका एकादशी के व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, संसार में इससे अधिक पापों को नष्ट करने वाला कोई और उपाय नहीं है। हे नारदजी स्वयं भगवान

ने अपने मुख से कहा है कि मनुष्यों को आध्यात्म विद्या से जो फल मिलता है, उससे अधिक फल कामिका एकादशी का व्रत करने से मिल जाता है। इस व्रत के करने से मनुष्य अन्तिम समय में अनेक दुःखों से युक्त यमराज तथा नरक के दर्शन नहीं करता। कामिका एकादशी के व्रत तथा रात्रि के जागरण से मनुष्य को कुयोनि नहीं मिलती और अन्त में स्वर्ग लोक को जाता है।

जो मनुष्य श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी को तुलसी से भक्ति पूर्वक श्री विष्णु भगवान की पूजा करते हैं, वे इस संसार सागर में रहते हुये भी इस प्रकार अलग रहते हैं जिस प्रकार कमल पुष्प जल में रहता हुआ भी जल से अलग रहता है। भगवान की तुलसी दल से पूजा करने का फल एक भार स्वर्ण और चार

भार चाँदी के दान के फल के बराबर है। श्री विष्णु भगवान रत्न, मोती, मणि आदि आभूषणों की अपेक्षा तुलसी दल से अधिक प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य भगवान की तुलसी दल से पूजा करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारदजी ! मैं भगवान की अत्यन्त प्रिय श्री तुलसीजी को नमस्कार करता हूँ। तुलसीजी के दर्शन मात्र से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और शरीर के स्पर्श मात्र से मनुष्य पवित्र हो जाता है। तुलसीजी को जल से स्नान कराने से मनुष्य की समस्त यम यातनायें नष्ट जाती है। जो मनुष्य तुलसी जी को भक्ति पूर्वक भगवान के चरण कमलों में अर्पित करता है, उसे मुक्ति मिलती है। जो मनुष्य इस कामिका एकादशी की रात्रि को जागरण करते हैं और दीप-दान

करते हैं, उनके पुण्यों को लिखने में चित्रगुप्त भी असमर्थ है।

जो मनुष्य एकादशी के दिन भगवान के सामने दीप जलाते हैं, उनके पितृ स्वर्ग लोक में सुधा का पान करते हैं। जो मनुष्य भगवान के सामने घी या तिल के तेल का दीपक जलाते हैं, उनको सूर्य लोक में भी सहस्रों दीपकों का प्रकाश मिलता है। प्रत्येक मनुष्य को इस एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। इस व्रत के करने से ब्रह्महत्या, ब्राह्मण हत्या आदि के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में सुख भोगकर अन्त में विष्णु लोक को जाते हैं। इस कामिका एकादशी के महात्म्य के श्रवण व पठन से मनुष्य स्वर्ग लोक को जाते हैं।

## पुत्रदा एकादशी महात्म्य

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! अब आप मुझे श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनाये। इस एकादशी का क्या नाम है तथा इसकी विधि क्या है ? श्री मधुसूदन बोले कि हे राजन् ! अब आप शान्ति पूर्वक श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनिये। इस कथा के श्रवण मात्र से ही बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

द्वापर युग के प्रारम्भ में महिष्मती नाम की नगरी थी। उस नगरी में महाजित नाम का एक राजा राज्य करता था। वह पुत्रहीन था।

इसलिये वह सदैव दुःखी रहता था। उसे वह राज्य कष्टदायक प्रतीत होता था क्योंकि पुत्र के बिना इस लोक और परलोक दोनों में सुख नहीं हैं। राजा ने पुत्र की प्राप्ति के बहुत यत्न किये, परन्तु वह निष्फल गये। जब वह राजा वृद्ध होने लगा तो उसकी चिन्ता भी बढ़ने लगी। एक दिन उसने प्रजा को सम्बोधन करके कहा कि न तो मैंने अपने जीवन में पाप किया है और न अन्याय पूर्वक प्रजा से धन ही एकत्रित किया है। न मैंने कभी देवता और ब्राह्मणों को धन छीना है और न किसी की धरोहर ही मारी। मैंने प्रजा को सदैव पुत्र की तरह पाला है, कभी किसी से राग, द्वेष नहीं किया, सबको समान माना। इस प्रकार धर्मयुक्त राज्य करने पर भी मैं इस समय महान् दुःख पा रहा हूँ, सो क्या कारण है? मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

राजा महीजित की इस बात को विचारने के लिये मन्त्री आदि वन को गये। वहाँ वन में जाकर उन्होंने बड़े-2 ऋषि मुनियों के दर्शन किये। उस स्थान पर वयोवृद्ध और धर्म के ज्ञाता महर्षि लोमश के पास गये। उन सबने जाकर उन महर्षि को यथायोग्य प्रणाम किया और उनके सम्मुख बैठ गये। उनके दर्शन से सबको बड़ी प्रसन्नता हुई और उनकी विनय करने लगे कि हे देव ! हमारे अहो भाग्य हैं कि हमने आपके दर्शन करे। इस पर लोमश ऋषि बोले कि, हे मन्त्रीगण ! आप लोगों की विनय और आपके सद्व्यवहार से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। आप मुझे अपने आने का कारण बतलाइये। मैं आपके कार्य को अपनी शक्ति के अनुसार अवश्य ही करूँगा क्योंकि हमारा शरीर ही परोपकार के लिये बना है। इसमें किंचित मात्र भी सन्देह

नहीं। लोमश ऋषि के ऐसे वचन सुनकर मन्त्री बोले कि, हे महर्षि ! आप हमारी समस्त बातों को जानने में ब्रह्मा से भी अधिक हैं। अतः आप हमारे सन्देह को दूर कीजिये। महिष्मती नाम की पुरी में महीजित नाम का एक धर्मात्मा राजा है। वह प्रजा का पुत्र की तरह धर्मानुसार पालन करता है, परन्तु फिर भी पुत्रहीन है। इससे वह अत्यन्त दुःखी रहता है। हम लोग उस राजा की प्रजा हैं। हम भी उसके दुःख से दुःखी हो रहे हैं। क्योंकि प्रजा का यह कर्तव्य है कि राजा के सुख में सुख माने और दुःख में दुःख माने। हमको उसके पुत्रहीन होने का अभी तक कारण प्रतीत नहीं हुआ। इससे हम आपके पास आये हैं। जब से हमने आपके दर्शन करे हैं, हमको पूर्ण रूप से विश्वास है कि हमारा कष्ट अवश्य ही दूर हो जाएगा। क्योंकि महान् पुरुषों

के दर्शन मात्र से ही प्रत्येक कार्य की सिद्धि हो जाती है। अतः अब आप हमको राजा के पुत्र होने का उपाय बतलाइये।

इस पर लोमश ऋषि ने एक क्षण के लिए नेत्र बन्द किये और राजा के पूर्व जन्मों का विचार करने लगे। वह विचार करके बोले कि हे श्रेष्ठ पुरुषों ! यह राजा पिछले जन्म में अत्यन्त निर्लज्ज था तथा बुरे कर्म किया करता था। वह एक गाँव से दूसरे गाँव में घूमा करता था। एक बार ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को दो दिन से भूखा था। दोपहर के समय एक जलाशय पर जल पीने गया। उस स्थान पर एक उसी समय ब्याही हुई गाय जल पी रही थी। राजा ने उसको प्यासी ही भगा दिया और स्वयं जल पीने लगा। हे ब्राह्मणों ! इसीलिये राजा को यह दुःख भोगने पड़ रहे हैं। एकादशी

के दिन भूखा रहने से उनको राजा होना पड़ा और प्यासी गौ को हटाने से पुत्र वियोग का दुःख भोगना पड़ रहा है।

इस पर सब लोग बोले कि हे महर्षि शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि पुण्य से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिये कृपा करके आप राजा के पूर्वजन्म के पाप नष्ट होने का उपाय बतलाइये क्योंकि उस पाप के क्षय होने से पुत्र रत्न की उत्पत्ति होगी। ब्राह्मण के ऐसे वचनों को सुनकर लोमश ऋषि बोले कि हे ब्राह्मणों ! यदि श्रावण मास की शुक्लपक्ष की पुत्रदा एकादशी का तुम सब लोग व्रत करो और रात्रि को जागरण करो और उस व्रत का फल राजा को प्रदान कर दो तो तुम्हारे राजा के पुत्र पैदा होगा। राजा के समस्त दुःख नष्ट हो जायेंगे।

मन्त्रियों सहित समस्त प्रजा महर्षि लोमश ऋषि के वाक्यों को सुनकर प्रसन्नता पूर्वक अपने नगर को वापिस आये। उन सब लोगों ने श्रावण मास के शुक्लपक्ष की पुत्रदा एकादशी को लोमश ऋषि की आज्ञानुसार विधि पूर्वक व्रत किया और द्वादशी को उसका फल राजा को दिया। उस पुण्य के प्रभाव रानी ने गर्भ धारण किया और नौ महीने के पश्चात् उसके एक अत्यन्त तेजस्वी पुत्र रत्न पैदा हुआ।

हे राजन् ! इसलिये इस एकादशी का नाम पुत्रदा पड़ा। जो मनुष्य पुत्र रत्न को प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें इस एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करना चाहिये। इस व्रत के प्रभाव से इस लोक में सुख और परलोक में स्वर्ग मिलता है।

## अजा एकादशी महात्म्य

भादों मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! अब आप मुझे भाद्रपद मास की कृष्णपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये । उस एकादशी का क्या नाम है तथा इसकी क्या विधि है ? सो विस्तार पूर्वक कहिये ।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन् भादों की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अजा कहते हैं । इसके व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य इस दिन भगवान की भक्ति पूर्वक पूजा करते हैं तथा व्रत करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । इस लोक और परलोक में सहाय करने वाली इस एकादशी व्रत के समान विश्व में

दूसरी एकादशी नहीं हैं । इस एकादशी की कथा इस प्रकार है ।

प्राचीन काल में एक चक्रवर्ती राजा राज्य करता था । उसका नाम हरिश्चन्द्र था । वह अत्यन्त वीर प्रतापी तथा सत्यवादी था । उसने अपनी स्त्री तथा पुत्र को बेच डाला । वह स्वयं एक चाण्डाल का सेवक बन गया । उसने उस चाण्डाल के यहाँ कफन लेने का काम किया । परन्तु उसने इस आपत्ति के काम में भी सत्य को न छोड़ा । जब इस प्रकार रहते हुये उसको बहुत वर्ष हो गये तो उसे अपने इस नीच कर्म पर बड़ा दुःख हुआ और वह इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगा । वह उस जगह सदैव इसी चिन्ता में लगा रहता था कि मैं क्या करूँ । एक समय जब कि वह चिन्ता कर रहा था तो गौतम ऋषि आये । राजा ने इन्हें देखकर प्रणाम किया और अपनी दुःख



की कथा सुनाने लगे। महर्षि राजा के दुःख से पूर्ण वाक्यों को सुनकर अत्यन्त दुःखी हुये और राजा से बोले कि हे राजन् ! भादों के कृष्णपक्ष में एक एकादशी होती है। एकादशी का नाम अजा है। तुम उसी अजा नामक एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करो तथा रात्रि को जागरण करो। इससे तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। गौतम ऋषि राजा से इस प्रकार कहकर अन्तर्ध्यान हो गये।

अजा नाम की एकादशी आने पर राजा ने मुनि के कहे अनुसार विधि पूर्वक व्रत तथा रात्रि जागरण किया। उसी व्रत के प्रभाव से राजा के समस्त पाप नष्ट हो गये। उस समय स्वर्ग में नगाड़े बजने लगे तथा पुष्पों की वर्षा होने लगी। उसने अपने सामने ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, महादेवजी आदि देवताओं को खड़ा पाया। उसने अपने मृतक

पुत्र को जीवित तथा स्त्री को वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त देखा। व्रत के प्रभाव से उसको पुनः राज्य मिला। अन्त समय अपने परिवार सहित स्वर्ग लोक को गया। हे राजन् ! यह सब अजा एकादशी के व्रत का प्रभाव था। जो मनुष्य इस व्रत को विधि विधान पूर्वक करते हैं तथा रात्रि जागरण करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त समय में स्वर्ग को जाते हैं। इस एकादशी की कथा के श्रवण मात्र से ही अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

वामन (परिवर्तिनी) एकादशी महात्म्य

भादों मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन ! भादों की शुक्लपक्ष की

एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी विधि क्या है ? उस एकादशी के व्रत को करने से कौनसा फल मिलता है, सो सब समझाकर कहिये ।

श्रीकृष्ण भगवान्—बोले कि हे राजश्रेष्ठ ! अब मैं अनेक पाप नष्ट करने वाली तथा अन्त में स्वर्ग देने वाली भादों की शुक्ल पक्ष की वामन नाम की एकादशी की कथा को कहता हूँ । आप इसे ध्यान पूर्वक सुनो । इस एकादशी को जयन्ती एकादशी भी कहते हैं । इस एकादशी की कथा के सुनने मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है । इसी एकादशी के व्रत का फल बाजपेय यज्ञ के फल से भी अधिक है । इस जयन्ती एकादशी की कथा से नीच पापियों का उद्धार हो जाता है । यदि कोई धर्मपरायण मनुष्य एकादशी के दिन मेरी पूजा करता है तो मैं उसको संसार की पूजा का फल देता हूँ ।

जो मनुष्य मेरी पूजा करता है, उसे मेरे लोक की प्राप्ति होती है । इसमें किंचित मात्र भी सन्देह नहीं । जो मनुष्य इस एकादशी के दिन श्रीवामन भगवान की पूजा करता है, वह तीनों देवता अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा करता है । जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं, उन्हें इस संसार में कुछ भी करना शेष नहीं रहता ।

इस एकादशी के दिन श्रीविष्णु भगवान करवट बदलते हैं, इसलिये इसे परिवर्तिनी एकादशी भी कहते हैं । इस पर श्री युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! आपके वचनों को सुनकर मुझे महान् संदेह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते तथा करवट बदलते हैं ? आपने बलि को क्यों बाँधा और वामन रूप धारण करके क्या लीलायें कीं । चातुर्मास्य व्रत की विधि क्या है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य

का क्या कर्तव्य है, सो सब विस्तार पूर्वक कहिये। श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन् ! अब आप पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करो।

त्रेतायुग में बलि नाम का एक दानव था। वह अत्यन्त भक्त, दानी, सत्यवादी तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला था। वह सदैव यज्ञ, तप आदि किया करता था। वह अपनी भक्ति के प्रभाव से स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर राज्य करने लगा। इन्द्र तथा अन्य देवता इस बात को सहन न कर सके और भगवान् के पास जाकर प्रार्थना करने लगे। अन्त में भगवान् ने वामन रूप धारण किया। मैंने भगवान् तेजस्वी ब्राह्मण बालक रूप में राजा बलि को जीता।

इस पर राजा युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! आपने वामन रूप

धारण करके उस बलि को किस प्रकार जीता, यह सब विस्तार पूर्वक समझाइये। श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन् ! मैंने वामन रूप धारण करके राजा बलि से याचना की कि हे राजन् ! तुम मुझे तीन पैर भूमि दे दो, इससे तुम्हारे लिये तीन लोक दान का फल प्राप्त होगा। राजा बलि ने इस छोटी सी याचना को स्वीकार कर लिया और भूमि देने को तैयार हो गया। तब मैंने अपने आकार को बढ़ाया और भूलोक में पैर, भुवन लोक में जंघा, स्वर्ग लोक में कमर, महलोक में पेट, जन लोक में हृदय, तप लोक में कंठ और सत्यलोक में मुख रखकर अपने सिर को ऊँचा उठा लिया। उस समय सूर्य, नक्षत्र, इन्द्र तथा अन्य देवता मेरी स्तुति करने लगे। उस समय मैंने राजा बलि को पकड़ा और पूछा कि हे राजन् ! अब मैं तीसरा पैर कहाँ रखूँ। इतना

सुनकर राजा बलि ने अपना सिर नीचा कर लिया। उसके सिर पर मैंने अपना तीसरा पैर रख दिया और वह भक्त दानव पाताल को चला गया, जब मैंने उसे अत्यन्त विनीत पाया तो मैंने उससे कहा कि हे बलि ! मैं सदैव तुम्हारे पास रहूँगा। भादों के शुक्ल पक्ष की परिवर्तिनी नामक एकादशी के दिन मेरी एक प्रतिमा राजा बलि के पास रहती है और एक क्षीर सागर में शेषनाग पर शयन करती रहती है। इस एकादशी को विष्णु भगवान सोते हुये करवट बदलते हैं। इस दिन त्रिलोकी के नाथ श्री विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। इसमें चावल और दही सहित चाँदी का दान किया जाता है। इस दिन रात्रि को जागरण करना चाहिये। इस प्रकार व्रत करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त होकर स्वर्ग लोक को जाता है। वह स्वर्ग

लोक में जाकर चन्द्रमा के समान सदैव प्रकाशित रहते हैं। उनको इस लोक तथा परलोक दोनों में यश मिलता है। जो इन पापों को नष्ट करने वाली कथा सुनते हैं, उन्हें अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

### इन्दिरा एकादशी महात्म्य

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! अब आप कृपा पूर्वक आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा को कहिये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इस एकादशी के व्रत करने से कौन से फल मिलते हैं ? यह सब समझाकर कहिये। इस पर श्री कृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन् ! आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम

इन्दिरा है। इस एकादशी के व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के करने से नरक में गये हुए पितरों का उद्धार हो जाता है। हे राजन् ! इस एकादशी की कथा के सुनने मात्र से ही बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

प्राचीन सतयुग में महिष्मती नाम की नगरी में इन्द्रसेन नाम का एक प्रतापी राजा राज्य करता था। वह पुत्र, पौत्र, धन-धान्य आदि से पूर्ण और सदैव शत्रुओं का नाश करने वाला था। एक समय जबकि राजा अपनी राज सभा में सुख पूर्वक बैठा था, महर्षि नारद आकाश मार्ग से उतर कर वहाँ आये। नारदजी को देखकर राजा आसन से उठा और अर्घ्य आदि से उनकी पूजा करके आसन दिया। महर्षि नारद बोले कि हे राजन् ! आपके राज्य में सब कुशल से तो है। मैं आपकी

धर्म परायणता देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तब राजा बोला—हे महर्षि ! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल पूर्वक है तथा आपकी कृपा से मेरे समस्त यज्ञ कर्म आदि सफल हो गये हैं। हे देव ! अब आपकी क्या आज्ञा है। इस पर नारद जी बोले कि हे राजन् ! मुझे एक महान आश्चर्य हो रहा है कि एक समय जब मैं ब्रह्मलोक से यमलोक गया था उस समय यमराज की सभा के मध्य में तुम्हारे पिता को बैठे देखा। तुम्हारा पिता महान् ज्ञानी, दानी तथा धर्मात्मा था। वह एकादशी के व्रत के बिगड़ जाने से यमलोक को गया है। तुम्हारे पिता ने मुझ से तुम्हारे लिये एक समाचार भेजा है कि आप मेरे पुत्र के पास जायें। मेरे पुत्र का नाम इन्द्रसेन है, जो कि महिष्मती नाम की नगरी में राज्य करता है। मुझे किसी पूर्व जन्म के बुरे कर्म के कारण ही

यह लोक मिला है। यदि मेरा पुत्र इन्द्रसेन, आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की इन्दिरा एकादशी का व्रत करे और उस व्रत के फल को मुझे दे दे तो मेरी मुक्ति हो जाय। इस लोक से छूटकर स्वर्गलोक में वास करूँ।

जब राजा ने महर्षि नारद जी से पिता के ऐसे दुःख पूर्ण वाक्यों को सुना तो उसे महान् दुःख हुआ और इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि पूछने लगा कि हे नारदजी ! अब आप मुझे इस एकादशी के व्रत की विधि बतलाइये। इस पर नारद जी बोले कि हे राजन् ! आश्विन मास की कृष्णपक्ष की दशमी के दिन प्रातःकाल श्रद्धासहित स्नान करना चाहिये। इसके पश्चात् दोपहर को भी स्नान करना चाहिये। उस समय जल से निकल कर श्रद्धा पूर्वक पितरों का श्राद्ध करें

और उस दिन एक समय भोजन करें और रात्रि को पृथ्वी पर शयन करें। इसके दूसरे दिन अर्थात् एकादशी के दिन प्रातःकाल दातुन करे और स्नान करे। उसके पश्चात् भक्तिपूर्वक व्रत को धारण करे और कहना चाहिये कि मैं आज निराहार रहूँगा और समस्त भोगों को त्याग दूँगा। इसके पश्चात् कल भोजन करूँगा। हे भगवान् ! आप मेरी रक्षा करने वाले हैं। आप मेरे व्रत को सम्पूर्ण कराइये, इस प्रकार आचरण करके दोपहर को सालिगरामजी की मूर्ति को स्थापित करे और उत्तम ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराये और दक्षिणा दे। भोजन में से कुछ हिस्से को गौ को दे और विष्णु भगवान की धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करे और रात्रि को जागरण करे। इसके उपरान्त द्वादशी के दिन मौन होकर बन्धु-बान्धवों सहित भोजन करे। हे राजन् ! यह

इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि है।

हे राजन् ! यदि तुम आलस्य रहित होकर इस एकादशी के व्रत को करोगे तो तुम्हारे पिताजी अवश्य ही स्वर्ग में जायेंगे। महर्षि नारद राजा को सब उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गये। राजा ने इन्दिरा एकादशी के आने पर उसका विधि पूर्वक व्रत किया। बन्धु-बान्धव सहित इस व्रत के करने से आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और राजा का पिता यमलोक से रथ पर चढ़कर स्वर्ग को गया। राजा इन्द्रसेन भी इस एकादशी के प्रभाव से इस लोक में सुख भोग कर अन्त में स्वर्ग लोक को गया।

श्री कृष्ण भगवान कहने लगे कि, धर्मराज युधिष्ठिर ! यह मैंने तुम्हारे सामने इन्दिरा एकादशी का महात्म्य वर्णन किया। इस कथा के पढ़ने

व सुनने मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में मनुष्य स्वर्ग लोक में जाकर वास करता है।

### पाशांकुशा एकादशी महात्म्य

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम क्या है तथा उस व्रत के करने से कौन-कौन से फल मिलते हैं। यह सब कृपा पूर्वक कहिये। उस पर श्री कृष्ण भगवान बोले कि हे राजन् ! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम पाशांकुशा है। इसके व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और करने वाला अक्षय पुण्य का भागी होता है।

इस एकादशी के दिन मनवांछित फल की प्राप्ति के लिये श्रीविष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये। इस पूजन के द्वारा मनुष्य को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य कठिन तपस्याओं के द्वारा फल प्राप्ति करते हैं, वह फल इस एकादशी के दिन क्षीर-सागर में शेषनाग पर शयन करने वाले विष्णु भगवान को नमस्कार कर देने से मिल जाता है और मनुष्य को यम के दुःख नहीं भोगने पड़ते। जो विष्णु भक्त शिवजी की निन्दा करते हैं अथवा जो शिव भक्त विष्णु भगवान की निन्दा करता है, वे नरक को जाते हैं। हजार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ का फल इस एकादशी के फल के सोलहवें हिस्से के बराबर भी नहीं होता है अर्थात् इस एकादशी व्रत के समान संसार में अन्य कोई व्रत नहीं है। इस एकादशी के समान विश्व में पवित्र

तिथि नहीं है। जो मनुष्य एकादशी व्रत नहीं करते हैं, उन्हें पाप घेरे रहते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी कारण के वश में होकर केवल इस एकादशी का उपवास भी करता है तो उसे यम दर्शन नहीं होते।

इस एकादशी के व्रत से मनुष्य को स्वस्थ शरीर और सुन्दर स्त्री तथा धन-धान्य मिलता है और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत में रात्रि जागरण करते हैं, उन्हें बिना किसी रोक के स्वर्ग मिलता है। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं, उनके मातृपक्ष के दश पुरुष, पितृ पक्ष के दश पुरुष और स्त्री पक्ष के दश पुरुष, विष्णु का भेष धारण करके तथा सुन्दर आभूषणों से युक्त होकर विष्णु लोक को ले जाते हैं। जो मनुष्य आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की पाशांकुशा एकादशी का विधि पूर्वक



व्रत करते हैं, उन्हें हरिलोक मिलता है।

मनुष्य एकादशी के दिन भूमि, गौ, अन्न, जल, उपाहन, वस्त्र, छत्र आदि का दान करते हैं, उन्हें यमराज के दर्शन नहीं मिलते हैं। दरिद्री मनुष्य को भी यथाशक्ति कुछ दान देकर कुछ पुण्य अवश्य ही पैदा करना चाहिये। जो मनुष्य तालाब, बगीचा, धर्मशाला, प्याऊ, अन्न क्षेत्र आदि बनवाते हैं, उन्हें यम के दुःख नहीं मिलते। वह मनुष्य इस लोक में स्वस्थ दीर्घायु वाले पुत्र तथा धन-धान्य से पूर्ण होकर सुख भोगते हैं तथा अन्त में स्वर्ग लोक को जाते हैं।

हे राजन् ! इन सबका सारांश यह है कि जो मनुष्य धर्म करते हैं, उन्हें सुख मिलता है और जो अधर्मी हैं, उन्हें दुर्गति भोगनी पड़ती है।

## रमा एकादशी महात्म्य

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान् ! अब आप मुझे कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसमें कौन-सा फल मिलता है ? यह सब विस्तार पूर्वक कहिये। श्रीकृष्ण भगवान् बोले-कि हे राजन् ! कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम रमा है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है—

प्राचीन काल में मुचुकुन्द नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके इन्द्र, वरुण, कुबेर, विभीषण आदि मित्र थे। वह सत्यवादी

था। दूसरे नाम...

तथा विष्णु भक्त था। उसका राज्य बिल्कुल निष्कण्टक था। उसके एक उत्तम चन्द्रभागा नाम की लड़की उत्पन्न हुई। उसने उस लड़की का विवाह राजा चन्द्रसेन के पुत्र साभन के साथ किया। एक समय जब कि वह अपनी ससुराल में थी, एक एकादशी पड़ी। चन्द्रभागा सोचने लगी कि अब एकादशी समीप ही आई है परन्तु मेरा पति अत्यन्त कमजोर है, इसलिये यह व्रत नहीं कर सकता परन्तु मेरे पिता की कठिन आज्ञा है।

जब दशमी आई तब राज्य में ढिंढोरा पिटा तो उसको सुनकर सोभन अपनी पत्नी के पास गया और बोला कि हे प्रिय ! तुम मुझे कुछ उपाय बतलाओ क्योंकि मैं व्रत करूँगा तो मैं अवश्य ही मर जाऊँगा। इस पर चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! मेरे पिताजी के राज्य में एकादशी

के दिन कोई भी भोजन नहीं कर सकता। यहाँ तक कि हाथी, घोड़ा, ऊँट, पशु आदि भी तृण, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते; फिर यहाँ मनुष्य कैसे भोजन कर सकते हैं। यदि आप भोजन करना चाहते हैं तो दूसरे स्थान को चले जाइये। क्योंकि यदि आप इसी स्थान पर रहोगे तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा। उस पर सोभन बोला कि हे प्रिये ! तुम्हारा कहना बिल्कुल सत्य है। अब मैं व्रत अवश्य ही करूँगा, भाग्य में जो लिखा है, वह होवेगा ही।

ऐसा विचार करके उसने एकादशी का व्रत किया और भूख और प्यास से अत्यन्त पीड़ित होने लगा। सूर्य भगवान भी अस्त हो गये और जागरण के लिये रात्रि हुई। वह रात्रि सोभन को दुःख देने वाली थी। दूसरे दिन प्रातः से पूर्व ही सोभन इस संसार से चल बसा।

राजा ने उसके मृतक शरीर को दहन करा दिया। चन्द्रभागा अपने पति की आज्ञानुसार अग्नि में दहन न हुई परन्तु पिता के घर में रहना उत्तम समझा।

रमा एकादशी के प्रभाव से सोभन को मन्दराचल पर्वत पर धन-धान्य से युक्त तथा शत्रु रहित एक उत्तम नगर प्राप्त हुआ। उसके महल में रत्न तथा स्वर्ण के खम्भे लगे हुये थे। वहाँ पर वह स्वर्ण तथा मणियों के सिंहासन पर सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण से युक्त बैठा हुआ था। आभूषणों से युक्त गन्धर्व तथा अप्सरा इसकी स्तुति कर रहे थे। उस समय राजा सोभन दूसरा इन्द्र प्रतीत हो रहा था।

एक समय मुचुकुन्द नगर में रहने वाला एक सोमशर्मा नाम का ब्राह्मण तीर्थ यात्रा के लिये निकला। उसने घूमते-घूमते उसको देखा।

वह ब्राह्मण उसको अपने राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया। राजा सोभन ब्राह्मण को देख आसन से उठ खड़ा हुआ और अपने श्वसुर तथा स्त्री चन्द्रभागा की कुशलता को पूछने लगा—सोमशर्मा ब्राह्मण बोला कि हे राजन् ! हमारे राजा कुशल हैं तथा आपकी पत्नी चन्द्रभागा भी कुशल है। अब आप अपना वृत्तान्त बतलाइये। मुझे यह बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा विचित्र और सुन्दर नगर जिसको न तो मैंने कभी सुना और न कभी देखा है, आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ ? सोभन बोला कि हे देव ! यह सब कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के व्रत का प्रभाव है। इसी से मुझे यह अनुपम नगर प्राप्त हुआ है, परन्तु यह अध्रुव है। इस पर ब्राह्मण बोला कि हे राजन् ! यह अध्रुव क्यों है और ध्रुव किस प्रकार हो सकता है,

सो आप मुझे समझाइये। मैं आपके कहे अनुसार ही करूँगा। आप इसमें बिल्कुल झूठ न समझें। सोभन बोला कि हे देव ! मैंने अश्रद्धा पूर्वक व्रत किया था। उसके प्रभाव से मुझे यह नगर प्राप्त हुआ इसलिये मैं इसे अध्रुव मानता हूँ। यदि तुम इस वृत्तान्त को राजा मुचुकुन्द की पुत्री चन्द्रभागा से कहोगे तो वह उसको ध्रुव बना सकती है।

ब्राह्मण ने वहाँ आकर चन्द्रभागा से समस्त वृत्तान्त कहा। इस पर राजकन्या चन्द्रभागा बोली कि हे ब्राह्मण देव ! आप क्या वह सब वृत्तान्त प्रत्यक्ष देख कर आये हैं या अपना स्वप्न कह रहे हैं ? इस पर ब्राह्मण बोला कि हे पुत्री ! मैंने तेरे पति सोभन तथा उसके नगर को प्रत्यक्ष देखा है, परन्तु वह नगर अध्रुव है। तू कोई ऐसा उपाय कर जिससे कि वह ध्रुव हो जाय। इस पर चन्द्रभागा बोली कि हे

महाराज ! आप मुझे उस नगर में ले चलिये, मैं अपने पति को देखना चाहती हूँ। मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को ध्रुव बना लूँगी।

चन्द्रभागा के वचनों को सुनकर वह ब्राह्मण उसको मन्दराचल पर्वत के पास वामदेव के आश्रम को ले गया। वामदेव ने उसकी कथा को सुनकर चन्द्रभागा का मन्त्रों से अभिषेक किया। चन्द्रभागा मन्त्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास चली गई। सोभन ने अपनी स्त्री चन्द्रभागा को देखकर प्रसन्नता पूर्वक उसे वाम अंग में बैठाया। चन्द्रभागा बोली कि हे प्राणनाथ ! अब आप मेरे पुण्य को सुनिये, जब मैं अपने पिता के गृह में आठ वर्ष की थी, तब ही से मैं सविधि एकादशी का व्रत करने लगी हूँ। उन्हीं व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर ध्रुव हो जावेगा और समस्त कर्मों

से युक्त होकर प्रलय के अन्त तक रहेगा। चन्द्रभागा दिव्यरूप धारण करके तथा दिव्य वस्त्रालंकारों से सजकर अपने पति के साथ आनन्द पूर्वक रहने लगी और सोभन उसके साथ आनन्द पूर्वक रहने लगा।

हे राजन् ! यह मैंने रमा एकादशी का महात्म्य कहा है। जो मनुष्य रमा एकादशी के व्रत को करते हैं, उनके समस्त ब्रह्महत्या आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य रमा एकादशी का महात्म्य सुनते हैं, वह अन्त समय विष्णुलोक को जाते हैं।

### प्रबोधनी एकादशी महात्म्य

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

ब्रह्माजी बोले कि—हे मुनिश्रेष्ठ ! अब आप पापों को नष्ट करने वाली

तथा पुण्य और मुक्ति की देने वाली प्रबोधनी एकादशी का महात्म्य सुनिये। भागीरथी गङ्गा मनुष्य को तब ही तक फल देती है, जब तक कि कार्तिक मास की प्रबोधनी एकादशी नहीं आती। तीर्थ, नदी, समुद्र आदि भी तभी तक फल देते हैं, जब तक प्रबोधनी एकादशी नहीं आती। कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की प्रबोधनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्र अश्वमेध तथा सौ राजसूर्य यज्ञ के फल के बराबर होता है।

नारदजी ने पूछा कि हे पिता ! एक संध्या को भोजन करने से रात्रि में भोजन करने तथा पूरे दिन उपवास करने से क्या-क्या फल मिलता है। उसे आप समझाइये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एक संध्या को भोजन करने से दो जन्म के तथा पूरे दिन उपवास करने

से सात जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस वस्तु का त्रिलोक में मिलना दुष्प्राप्य है, वह वस्तु प्रबोधनी एकादशी के व्रत से मिल जाती है। प्रबोधनी एकादशी के व्रत के प्रभाव से सुमेरु पर्वत के समान महान पाप भी क्षणमात्र में ही नष्ट हो जाते हैं। अनेकों पूर्व जन्म के किये हुये बुरे कर्मों को प्रबोधनी एकादशी का व्रत क्षण भर में नष्ट कर देता है। जो मनुष्य अपने स्वभावानुसार इस प्रबोधनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करते हैं, उन्हें पूर्ण फल प्राप्त होता है।

हे मुनिवर ! जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक थोड़ा भी पुण्य करते हैं, वह उसका पुण्य पर्वत के समान अटल हो जाता है। जो अपने हृदय के अन्दर ही ऐसा ध्यान करते हैं कि प्रबोधनी एकादशी का व्रत करूँगा, उसके सौ जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रबोधनी

एकादशी को रात्रि जागरण करते हैं, उनकी बीती हुई तथा आने वाली दस पीढ़ियाँ विष्णु लोक में जाकर वास करती हैं और नरक में अनेक दुःखों को भोगते हुये पितृ विष्णुलोक में जाकर सुख भोगते हैं। ब्रह्महत्या आदि महान पाप भी प्रबोधनी एकादशी के दिन रात्रि को जागरण करने से नष्ट हो जाते हैं। प्रबोधनी एकादशी को रात्रि को जागरण करने का फल अश्वमेध आदि यज्ञों के फल से अधिक होता है। समस्त तीर्थों में जाने तथा गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान का फल कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की प्रबोधनी एकादशी के रात्रि के जागरण के फल के बराबर होता है।

इस संसार में उसी का जीवन सफल है, जिसने प्रबोधनी एकादशी के व्रत के द्वारा अपने कुल को पवित्र किया है। संसार में जितने

भी तीर्थ हैं तथा जितने भी तीर्थों की आशा की जा सकती है, वह प्रबोधनी एकादशी का व्रत करने वाले के घर में रहते हैं। मनुष्य को समस्त कर्मों को त्यागते हुये भगवान् की प्रसन्नता के लिये कार्तिक मास की प्रबोधनी एकादशी का व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत को करता है, वह धनवान्, योगी, तपस्वी तथा इन्द्रियों को जीतने वाला होता है क्योंकि वह एकादशी भगवान् विष्णु की अत्यन्त प्रिय है। इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य पुनः जन्म नहीं लेता है। इस व्रत के प्रभाव से कामिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी के दिन जो मनुष्य भगवान् की प्राप्ति के लिये दान, तप, होम, यज्ञ आदि करते हैं, उन्हें अक्षय पुण्य मिलता है।

प्रबोधनी एकादशी के दिन भगवान् की पूजा करने से बाल, यौवन और वृद्धावस्था के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी की रात्रि को जागरण करने का फल, सूर्य ग्रहण के समय स्नान करने के फल से सहस्र गुना अधिक होता है। मनुष्य जन्म से लेकर जो पुण्य करता है, वह पुण्य प्रबोधनी एकादशी के व्रत के पुण्य के सामने व्यर्थ है। जो मनुष्य प्रबोधनी का व्रत नहीं करते, उनके समस्त पुण्य व्यर्थ जाते हैं। इसलिये हे नारद ! तुमको भी विधिपूर्वक विष्णु भगवान् की पूजा करनी चाहिये। जो मनुष्य कार्तिक मास में धर्मपरायण होकर अन्य व्यक्तियों का अन्न नहीं खाते, उन्हें चान्द्रायण व्रत का फल मिलता है। कार्तिक मास में भगवान् दान आदि से उतने प्रसन्न नहीं होते जितने कि शास्त्रों की कथा सुनने से प्रसन्न होते हैं। कार्तिक

मास में जो मनुष्य भगवान की कथा को थोड़ा बहुत पढ़ते हैं या सुनते हैं, उन्हें सौ गौ के दान का फल मिलता है। जो मनुष्य अपने कल्याण के लिये विष्णु भगवान की कथा सुनते हैं, वे अपने कुटुम्ब का उद्धार करके एक सहस्र गौदान का फल पाते हैं। जो मनुष्य प्रबोधनी एकादशी के दिन विष्णु की कथा सुनते हैं, उन्हें सातों द्वीपों के दान का फल मिलता है। जो विष्णु की भक्ति पूर्वक कथा सुनते हैं और कथा कहने वाले ब्राह्मण की यथोचित पूजा करते हैं तथा उसे सन्तुष्ट करते हैं, वे उत्तम लोक को जाते हैं।

इस पर नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! अब आप एकादशी के व्रत का विधान कहिये और कैसा व्रत करने से कौन सा पुण्य मिलता है ? वह भी समझाइये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इस एकादशी

के दिन मनुष्य को ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिये और नदी, तालाब, कुआँ आदि पर स्नान करके व्रत का नियम ग्रहण करना चाहिये। उस समय भगवान से विनय करनी चाहिये कि हे भगवन ! आज मैं निराहर रहूँगा और दूसरे दिन भोजन करूँगा। इसलिये आप मेरी रक्षा करें। इस प्रकार विनय करके भगवान की पूजा करनी चाहिये और व्रत प्रारम्भ करना चाहिये। उस रात्रि को भगवान के समीप गीत, नृत्य, बाजे तथा कथा कीर्तन से समय व्यतीत करनी चाहिये। प्रबोधनी एकादशी के दिन कृपणता को त्यागकर बहुत से पुष्प, अगर, धूप आदि से भगवान की आराधना करनी चाहिये। शंख के जल से भगवान को अर्घ्य देना चाहिये। इसका फल तीर्थदान आदि से करोड़ गुना अधिक होता है। जो मनुष्य अगस्त्य पुष्प से भगवान की पूजा करते



हैं, उनके सामने इन्द्र भी हाथ जोड़ता है। कार्तिक मास में जो बिल्व पत्र से भगवान की पूजा करते हैं, उन्हें अन्त में मुक्ति मिलती है।

कार्तिक में जो मनुष्य तुलसीजी से भगवान की पूजा करता है, उसके दस हजार जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस नाम में श्री तुलसी जी के दर्शन करते हैं या छूते हैं या ध्यान करते हैं या कीर्तन करते हैं या रोपन अथवा सेवा करते हैं, वे हजार कोटियुग तक भगवान के घर में रहते हैं। जो मनुष्य तुलसी का पेड़ लगाते हैं, उनके कुटुम्ब में जो पैदा होते हैं, वे प्रलय के अन्त तक विष्णुलोक में रहते हैं। जो भगवान की कदम्ब पुष्प से पूजा करते हैं, वह यमराज के दुःखों को नहीं पाते। समस्त मनोवांछाओं की पूजा करने वाले भगवान कदम्ब पुष्प को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते

हैं। यदि उनकी कदम्ब पुष्प से पूजा की जाय तो फिर बात ही क्या है। जो गुलाब के पुष्प से भगवान की पूजा करते हैं, उन्हें मुक्ति मिलती है। जो मनुष्य बकुल और अशोक के फूलों से भगवान की पूजा करते हैं, वे अनन्त काल तक शोक से रहित हो जाते हैं। जो मनुष्य विष्णु भगवान की सफेद और लाल कनेर के फूलों से पूजा करते हैं, उन पर भगवान अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

जो मनुष्य विष्णु भगवान की दूर्वादल से पूजा करते हैं, वे पूजा के फल से सौ गुना फल अधिक पाते हैं। जो भगवान की शमीपत्र से पूजा करते हैं, वे भयानक यमराज के मार्ग को सरलता से पार कर जाते हैं। जो मनुष्य चम्पक पुष्प से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, वे आवागमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो मनुष्य स्वर्ण का बना

हुआ केतकी पुष्प भगवान पर चढ़ाते हैं, उनके करोड़ों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जो पीले और रक्त वर्ण कमल के सुगन्धित फूलों से भगवान की पूजा करते हैं, उन्हें श्वेत दीप में स्थान मिलता है।

इस प्रकार रात्रि में भगवान की पूजा करके प्रातःकाल शुद्ध जल की नदी में स्नान करना चाहिये। स्नान करने के पश्चात् भगवान की प्रार्थना करते हुये घर आकर भगवान की पूजा करनी चाहिये। इसके बाद व्रत के लिये ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये और दक्षिणा देकर मीठे वाक्यों द्वारा उनको विदा करना चाहिये। इसके उपरान्त भोजन गौ और दक्षिणा से गुरु की पूजा करनी चाहिये और ब्राह्मणों को भूर्यसी दक्षिणा देकर नियम को छोड़ना चाहिये। ब्राह्मण को रात्रि में भोजन करावे, स्वर्ण सहित बैल दान करना चाहिये। जो मनुष्य

रात्रि स्नान करते हैं, उन्हें दही और शहद दान करना चाहिये। जो मनुष्य फल की आशा करते हैं, उन्हें फल दान करना चाहिये। तेल की जगह घी और घी की जगह दूध और अन्न में चावन दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस व्रत में भूमि शयन करते हैं, उन्हें सब वस्तुओं सहित शैयादान करना चाहिये। जो मौन धारण करते हैं, उन्हें स्वर्ण सहित तिल दान करना चाहिये। जो मनुष्य कार्तिक मास में उपाहन धारण नहीं करते, उन्हें उपाहन दान करना चाहिये। जो इस मास में नमक त्यागते हैं, उन्हें शक्कर दान करनी चाहिये। जो मनुष्य नित्यप्रति देव मन्दिरों में दीप जलाते हैं, उन्हें स्वर्ण या तांबे के दीप को घी तथा बत्ती सहित दान करना चाहिये। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में किसी वस्तु को त्याग देते हैं, उन्हें उस दिन से पुनः ग्रहण करनी

चाहिये। जो मनुष्य प्रबोधनी एकादशी के दिन विधि पूर्वक व्रत करते हैं, उन्हें अनन्त सुख मिलता है और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

जो मानव चातुर्मास्य व्रत को बिना किसी विघ्न के पूरा कर देते हैं, उन्हें दुबारा जन्म नहीं मिलता। जिन मनुष्यों का व्रत खंडित हो जाता है, उन्हें दुबारा प्रारम्भ कर लेना चाहिए। जो मनुष्य इस एकादशी के महात्म्य को सुनते व पढ़ते हैं, उन्हें अनेक गौदान का फल मिलता है।

### पद्मिनी एकादशी महात्म्य

लौंद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान् ! अब आप अधिक (लौंद)

मास की शुक्लपक्ष की एकादशी के बारे में बतलायें। उस एकादशी का नाम क्या है तथा उसके व्रत की विधि क्या है? सो विधि पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन् ! अधिक (लौंद) मास की एकादशी जो कि अनेक पुण्यों को देने वाली है, उसका नाम पद्मिनी है। इस एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। हे राजन् ! इस विधि को मैंने सबसे पहले नारदजी से कहा था। यह विधि अनेक पापों को नष्ट करने वाली तथा मुक्ति और भुक्ति प्रदान करने वाली है। आप ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिये।

दशमी के दिन व्रत को शुरू करना चाहिये और काँसे के पात्र में भोजन, माँस, मसूर, चना, कोदों, शहद, शाक और पराया अन्न

दशमी के दिन नहीं खाना चाहिये। इस दिन हविष्य भोजन करना चाहिये और नमक भी नहीं खाना चाहिये। उस रात्रि को भूमि पर शयन करना चाहिये और ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना चाहिये। एकादशी के दिन प्रातः उठकर नित्य क्रिया से निवृत्त होकर दातुन करनी चाहिये और बारह कुल्ला करके पुण्य क्षेत्र में स्नान करने चले जाना चाहिये। उस समय गोबर मृत्तिका, तिल, कुश तथा आमल की पूर्ण विधि पूर्वक स्नान करना चाहिये। स्नान करने से प्रथम शरीर में मिट्टी लगाते हुए उसी से प्रार्थना करनी चाहिये। हे मृत्तिके ! तुमको भगवान ने शूकर रूप धारण करके निकाला है। ब्रह्माजी ने तुम्हे दिया है और कश्यपजी ने तुमको मन्त्रों से पूजा है इसलिये तुम मुझे भगवान की पूजा करने के लिये शुद्ध बनादो। समस्त औषधियों से पैदा हुई, गौ

पेट में स्थित करने वाली और पृथ्वी को पवित्र करने वाली, तुम मुझे शुद्ध करो। ब्रह्मा के थूक से पैदा होने वाली ! तुम मेरे शरीर को छू कर मुझे पवित्र करो। हे शंख चक्र गदा धारी देवों के देव ! जगन्नाथ ! आप मुझे स्नान के लिये आज्ञा दीजिये। इसके उपरान्त वरुण मंत्र को जपकर स्नान करना चाहिये। पवित्र तीर्थों के अभाव में उनका स्मरण करते हुए किसी तालाब में स्नान करना चाहिये।

स्नान करने के पश्चात् स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र को धारण करके तथा संध्या तर्पण करके मन्दिर में जाकर भगवान की पूजा करनी चाहिये। स्वर्ण की राधा सहित कृष्ण भगवान् की प्रतिमा और पार्वती सहित महादेवजी की प्रतिमा बनाकर पूजन करे। धान्य के ऊपर मिट्टी या ताँबे का घड़ा रखना चाहिये। उस घड़े को वस्त्र तथा गन्ध आदि

से अलंकृत करके, उसके मुँह पर ताँबे, चाँदी या सोने का पात्र रखना चाहिये। उस पात्र पर भगवान् की प्रतिमा रखकर धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, केशर आदि से उनकी पूजा करनी चाहिये। उसके उपरान्त भगवान् के सम्मुख नृत्य गान आदि करे। उस दिन पतित तथा रजस्वला स्त्री का स्पर्श नहीं करना चाहिये। उस दिन असत्य बोलना तथा गुरु और ब्राह्मण की निन्दा नहीं करनी चाहिये। उस दिन भक्तजनों के साथ भगवान् के सामने पुराण की कथा सुननी चाहिये। अधिक (लौंद) मास की शुक्ल पक्ष की पद्मिनी एकादशी का व्रत निर्जल करना चाहिये। यदि मनुष्य शक्ति रहती हो तो उसे जलपान या अल्पाहार से व्रत करना चाहिये। रात्रि में जागरण करके नाच और गान करके भगवान् का स्मरण करते रहना चाहिये। प्रति पहर मनुष्य को भगवान्

या महादेवजी की पूजा करनी चाहिये। भगवान् को पहले पहर में नारियल, दूसरे में बिल्वफल, तीसरे में सीताफल और चौथे में सुपारी, नारङ्गी अर्पण करना चाहिये। इससे पहले पहर में अग्नि होम का, दूसरे में बाजपेय यज्ञ, का तीसरे में अश्वमेज्ञ यज्ञ का और चौथे में राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। इस फल से अधिक संसार में न यज्ञ है, न विद्या है, न तप है, न दान आदि है। एकादशी का व्रत करने वाले मनुष्य को समस्त तीर्थ और यज्ञों का फल मिल जाता है। इस तरह से सूर्योदय तक जागरण करना चाहिये और स्नान करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। सब पदार्थ भगवान् की प्रतिमा सहित ब्राह्मणों को देना चाहिये। इस प्रकार जो मनुष्य विधि पूर्वक भगवान् की पूजा तथा व्रत करते हैं, उनका जन्म सफल होता है और

इस लोक में अनेक सुखों को भोगकर अन्त में परमधाम को जाते हैं। हे राजन् ! मैंने आपको एकादशी के व्रत का पूरा विधान बता दिया। अब जो पद्मिनी एकादशी का भक्ति पूर्वक व्रत कर चुके हैं, उनकी कथा को कहता हूँ, ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिये। यह सुन्दर कथा पुलस्त्यजी ने नारदजी से कही थी।

एक समय कार्तवीर्य ने रावण को कारागार में बन्द कर दिया। उसे पुलस्त्यजी ने कार्तवीर्य को विनय करके छोड़ाया। इस घटना को सुनकर नारदजी ने पुलस्त्यजी से पूछा कि हे महाराज ! उस मायावी रावण को जिसने समस्त देवताओं सहित देवराज इन्द्र को जीत लिया, कार्तवीर्य ने किस प्रकार जीता, सो आप मुझे समझाइये। इस पर पुलस्त्यजी बोले कि हे नारदजी ! आप अब कार्तवीर्य की उत्पत्ति सुनो।

त्रेतायुग में महिष्मती नाम की नगरी में कार्तवीर्य नामक एक राजा राज्य करता था। उस राजा के सौ स्त्रियाँ थीं, उसमें से किसी के भी राज्य भार संभालने वाला योग्य पुत्र नहीं था। तब राजा ने आदर पूर्वक पण्डितों को बुलवाया और पुत्र की प्राप्ति के लिये यज्ञ किये, परन्तु सब असफल रहे। जिस प्रकार दुःखी मनुष्य को भोग नीरस मालूम पड़ते हैं, उसी प्रकार उसको भी राज्य पुत्र बिना सुख देने वाला प्रतीत नहीं होता था। अन्त में वह तप के द्वारा ही सिद्धियों को प्राप्त जानकर तपस्या करने के लिये वन को चला गया। उसकी स्त्री (हरिश्चन्द्र की पुत्री प्रमदा) वस्त्रालङ्कारों को त्याग कर अपने पति के साथ गन्धमादन पर्वत पर चली गई। उस स्थान पर इन लोगों ने दस सहस्र वर्ष तक तपस्या की परन्तु सिद्धि प्राप्त न हो सकी।

राजा के शरीर में केवल हड्डियाँ रह गईं। यह देख कर प्रमदा ने विनय सहित महासती अनुसुइया से पूछा कि मेरे पतिदेव को तपस्या करते हुए दस सहस्र वर्ष बीत गये, परन्तु अभी तक भगवान प्रसन्न नहीं हुये हैं, जिससे मुझे पुत्र प्राप्त हो।

इस पर अनुसुइयाजी बोली कि अधिक (लौंद) मास में जो कि छत्तीस महीने बाद आता है, उसमें दो एकादशी होती हैं। इसमें शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम पद्मिनी और कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम परमा है। उसके जागरण और व्रत करने से भगवान् तुम्हें अवश्य ही पुत्र देंगे। इसके पश्चात् अनुसुइयाजी ने व्रत की विधि बतलाई। रानी ने अनुसुइया की बतलाई विधि के अनुसार एकादशी का व्रत और रात्रि में जागरण किया। इससे भगवान विष्णु उस पर बहुत प्रसन्न

हुये और वरदान माँगने के लिये कहा। रानी उस पर भगवान की स्तुति करने लगी। रानी ने कहा कि आप यह वरदान मेरे पति को दीजिये। प्रमदा का वचन सुनकर भगवान विष्णु बोले कि प्रमदे ! मल मास (लौंद) मुझे बहुत प्रिय है। जिसमें एकादशी तिथि मुझे सबसे अधिक प्रिय है। इस एकादशी का व्रत तथा रात्रि जागरण तुमने विधि पूर्वक किया। इसलिये तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इतना कहकर भगवान विष्णु राजा से बोले कि हे राजेन्द्र ! तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर माँगो। क्योंकि तुम्हारी स्त्री ने मुझको प्रसन्न किया है।

भगवान की सुन्दर वाणी सुनकर राजा बोला कि हे भगवन् ! आप मुझे सबसे श्रेष्ठ सबके द्वारा पूजित तथा आपके अतिरिक्त देव, दानव, मनुष्य आदि से अजेय उत्तम पुत्र दीजिये। भगवान उससे तथास्तु कहकर

अन्तर्ध्यान हो गये। वे दोनों अपने राज्य को वापिस आ गये। उन्हीं के यहाँ कार्तवीर्य उत्पन्न हुये थे। वह भगवान के अतिरिक्त सबसे अजेय थे। इन्होंने रावण को जीत लिया था। यह सब पद्मिनी के व्रत का प्रभाव था। इतना कहकर पुलस्त्यजी वहाँ से चले गये।

भगवान बोले कि हे धर्मराज ! यह मैंने अधिक (लौंद) मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कहा है। जो मनुष्य इस व्रत को करता है, वह विष्णु लोक को जाता है। भगवान का वचन सुनकर युधिष्ठिर ने भी अपने कुटुम्ब सहित इस व्रत को किया। सूतजी बोले कि हे ब्राह्मणों ! जो आपने पूछा था, सो मैंने सब कह दिया। अब आप क्या सुनना चाहते हैं ? जो मनुष्य इसकी कथा को सुनेंगे वे स्वर्गलोक को जावेंगे।

## परमा एकादशी महात्म्य

लौंद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी

श्रीयुधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! अब आप अधिक (लौंद) मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम तथा उसके व्रत की विधि बतलाइये। श्री कृष्ण बोले कि हे राजन् ! इस एकादशी का नाम परमा है। इसके व्रत से समस्त पाप क्षय होकर इस लोक में सुख तथा परलोक में मुक्ति मिलती है। इसका व्रत पूर्वोक्त विधि से करना चाहिये और भगवान विष्णु की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिये। इस एकादशी के विषय की मनोहर कथा जो कि महर्षियों के साथ काम्पिल्य नगरी में हुई थी, कहता हूँ। आप ध्यान



पूर्वक श्रवण कीजिये ।

काम्पिल्य नगर में सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण रहता था । उसकी स्त्री अत्यन्त पवित्र तथा पतिव्रता थी । वह किसी पूर्व पाप के कारण अत्यन्त दरिद्र थी । उसे भिक्षा माँगने पर भी नहीं मिलती थी । वह सदैव वस्त्रों से रहित होते हुये भी अपने पति की सेवा करती रहती थी । वह अतिथि को अन्न देकर स्वयं भूखी रह जाती थी और पति से कभी किसी वस्तु की माँग नहीं करती थी ।

जब सुमेधा ने अपनी स्त्री को अत्यन्त दुर्बल देखा तो वह बोला— हे प्रिय ! जब मैं धनवानों से धन माँगता हूँ तो वह मुझे नहीं देते । गृहस्थी केवल धन से चलती है, अब मैं क्या करूँ ? इसलिये यदि तुम्हारी राय हो तो मैं परदेश जाकर कुछ उद्योग करूँ, क्योंकि विद्वानों

ने उद्योग की प्रशंसा की है । इस पर उसकी स्त्री विनीत भाव से बोली कि हे प्राणनाथ ! मैं आपकी आज्ञा की चेरी हूँ । पति अच्छा और बुरा जो कुछ भी कहे पत्नी को वही करना चाहिये । मनुष्य को पूर्व जन्म के कर्मों का फल मिलता है । सुमेरु पर्वत पर रहते हुये भी मनुष्य को बिना भाग्य के स्वर्ण नहीं मिलता । पूर्व जन्म में जो मनुष्य विद्या और भूमि दान करते हैं, उन्हें इस जन्म में विद्या और भूमि मिलती है । विधाता ने भाग्य में जो कुछ लिखा है, वह टाले से नहीं टलता । यदि कोई मनुष्य दान नहीं करता तो भगवान उसे केवल अन्न ही देते हैं इसलिये आपको इसी स्थान पर रहना चाहिये क्योंकि मैं आपकी वियोग नहीं सह सकती । पति बगैर स्त्री की संसार के माता, पिता, भाई, श्वसुर तथा सम्बन्धी निन्दा करते हैं । इसलिये

हे प्राणनाथ आपको उसी स्थान पर रहना चाहिये ।

एक समय कौण्डिन्य मुनि उस जगह आये । उनको आते देखकर सुमेधा सहित स्त्री ने प्रणाम किया और बोले हम आज धन्य हैं । आज हमारा जीवन आपके दर्शन से सफल हुआ । उन्होंने उसको आसन तथा भोजन दिया । भोजन देने के पश्चात् पतिव्रता बोली कि हे मुनि ! आप मुझे दरिद्रता का नाश करने की विधि बतलाइये । मैंने अपने पति को परदेश में धन कमाने से जाने को रोका है । मेरे भाग्य से आप आ गये हैं । मुझे पूर्ण निश्चय है कि अब मेरी दरिद्रता शीघ्र ही नष्ट होने वाली है । अतः आप हमारी दरिद्रता नष्ट करने के लिये किसी व्रत को बतलाइये । इस पर कौण्डिन्य मुनि बोले कि मल मास की कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी के व्रत से समस्त पाप, दुःख

और दरिद्रता आदि क्षय हो जाते हैं । जो मनुष्य इस व्रत को करता है, वह धनवान हो जाता है ।

इस व्रत में नाच, गान, आदि सहित रात्रि जागरण करना चाहिये । कुबेर को महादेवजी ने इसी व्रत के करने से धनाध्यक्ष बना दिया था । इसी व्रत के प्रभाव सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को, पुत्र, स्त्री और राज्य प्राप्त हुआ था । उस मुनि ने उसको एकादशी के व्रत की समस्त विधि कह सुनाई । यह मुनि फिर बोले कि हे ब्राह्मणी ! पंचरात्रि व्रत इससे भी अधिक उत्तम है । परमा एकादशी के दिन प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त होकर विधि पूर्वक पञ्चरात्रि व्रत आरम्भ करना चाहिये । जो मनुष्य पाँच दिन तक निर्जल व्रत करते हैं, वे अपने माता पिता और स्त्री सहित स्वर्ग लोक को जाते हैं । जो पाँच दिन तक सन्ध्या

को भोजन करते हैं, वे स्वर्ग को जाते हैं। जो मनुष्य स्नान करके पाँच दिन तक ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, उन्हें समस्त संसार के भोजन कराने का फल मिलता है। इस व्रत में जो घोड़े दान करते हैं, उन्हें तीनों लोक दान करने का फल मिलता है। जो मनुष्य उत्तम ब्राह्मण को तिल सहित दान करते हैं, वे तिल की संख्या के बराबर विष्णु लोक में रहते हैं। जो घी का पात्र दान करते हैं, वह सूर्य लोक को जाते हैं। जो पाँच दिन तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहते हैं, वे देवांगनाओं के साथ स्वर्ग जाते हैं। ब्राह्मणी ! तुम अपने पति के साथ इसी व्रत को करो। उससे तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होगी। कौण्डिन्य मुनि के कहे अनुसार उन्होंने परमा एकादशी का पाँच दिन तक व्रत किया। व्रत समाप्त होने पर उसने देखा कि

राजकुमार उसके सामने खड़े हैं। राजकुमार ने एक उत्तम घर जो कि सब वस्तुओं से सजा हुआ था, रहने के लिये उन्हें दिया। राजकुमार उसको एक ग्राम देकर अपने महल को चले गये। वह दोनों इस व्रत के प्रभाव से इस लोक में अनन्त सुख भोग कर अन्त में स्वर्ग लोक को गये।

श्रीकृष्ण ने कहा हे राजन् ! जो मनुष्य परमा एकादशी का व्रत करता है, उसे समस्त तीर्थों व यज्ञों आदि का फल मिलता है। जिस प्रकार संसार में दो पैरों वालों में ब्राह्मण, चार पैरों वालों में गौ, देवताओं में इन्द्रराज श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार मासों में अधिक (लौंद) का मास उत्तम है। इस महीने में पंचरात्रि अत्यन्त पुण्य देने वाली है। इस महीने में पद्मिनी और परमा एकादशी भी श्रेष्ठ है। उनके

व्रत में समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः दुर्बल मनुष्य को एक व्रत जरूर करना चाहिये। जो मनुष्य अधिक मास स्नान तथा एकादशी व्रत नहीं करते, उन्हें आत्महत्या का पाप लगता है। यह मनुष्य योनि बड़े पुण्यों से मिलती है, इसलिये मनुष्य को एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये।

ये युधिष्ठिर ! जो आपने पूछा था, सो मैंने आपको बतला दिया। अब आप इस व्रत को भक्ति सहित कीजिए। जो मनुष्य अधिक मास (लौंद) की परमा एकादशी का व्रत करते हैं, वह स्वर्गलोक में जाकर इन्द्र के समान सुखों को भोगते हुए तीन लोकों में वन्दनीय होते हैं।

इति श्री एकादशी व्रत, महात्म्य कथा समाप्तम्

## आरती ॐ जै जगदीश हरे

ॐ जै जगदीश हरे, स्वामी जै जगदीश हरे। भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे। ॐ १।  
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मनका। सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका। ॐ २।  
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी। ॐ ३।  
तुम पूरन परमात्मा तुम सबके अन्तर्यामी। पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ ४।  
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता। मैं मूर्ख खलकामी कृपा करो भरता। ॐ ५।  
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। किस विधि मिलूँ गोसाईं तुमको मैं कुमति। ॐ ६।  
दीन बन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे। करुणा हाथ बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे। ॐ ७।  
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ॐ ८।

## ❀ आरती कृष्ण चन्द्र जी की ❀

आरती युगल किशोर की कीजै । राधे धन न्यौछावर कीजै ॥ टेक ॥  
 रवि शशि कोटि बदन की शोभा. ताहि निरख मेरा मन लोभा ( 1 )  
 गौर श्याम मुख निरखत रीझे, प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजै ( 2 )  
 कंचन थार कपूर की बाती, हरि आये निर्मल भई छाती ( 3 )  
 फूलन की सेज फूलन गल माला, रत्नसिंहासन बैठे नन्दलाला ( 4 )  
 मोर मुकुट कर मुरली सोहे, नटवर वेश देख मन मोहे ( 5 )  
 ओढ़े नील पीत पटसारी कुञ्जबिहारी गिरवरधारी ( 6 )  
 श्री पुरुषोत्तम गिरवरधारी, आरती करत सकल ब्रजनारी ( 7 )  
 नन्दलाला वृषभान किशोरी, परमानन्द स्वामी अविचल जोरी ( 8 )  
 आरती युगल किशोर की कीजै । राधे धन न्यौछावर कीजै ॥

१९७ - एकादशी महात्म्य

## ❀ श्री रामचन्द्र जी की आरती ❀

आरती कीजै रामचन्द्र जी की, हरि हरि दुष्ट दलन सीतापति जी की । टेक ।  
 पहिली आरती पुष्पन की माला, काली नाग नाथ लाये गोपाला ॥ 1 ॥  
 दूसरी आरती देवकी नन्दन, भक्त उबारन कंस निकंदन ॥ 2 ॥  
 तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासन सीता रामजी सोहे ॥ 3 ॥  
 चौथी आरती त्रिभुवन चहुँ युग पूजा, देव निरंजन स्वामी और न दूजा ॥ 4 ॥  
 पाँचवी आरती राम को भावे, रामजी का यश नामदेवजी गावे ॥ 5 ॥

## ★ श्री लक्ष्मी जी की आरती ★

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता, तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु विधाता । टेक ।  
 बहाणी रुद्राणी तू ही है जगमाता, सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता । जय...  
 दुर्गा रूप निरंजन सुख सम्पत्ति दाता, जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता । जय...  
 तुही है पाताल बसन्ती तुही शुभ दाता, कर्म प्रभाव प्रकाशक जननिधि से त्राता । जय...  
 जिस घर थारो बासो तेही में गुण आता, कर न सके सोई करले मन नहिं धड़काता । जय...  
 तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता, खान पान का वैभव तुम बिन को दाता । जय...  
 शुभगुण सुन्दर मुक्ता क्षीरनिधि जाता, रत्न चतुर्दश ताको कोई नहीं पाता । जय...  
 आरती लक्ष्मी जी की जो कोई नर गाता, उर आनन्द अति उमंगे पाप उतर जाता । जय...  
 राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता, सदासुखी नित रहता सुख सम्पत्ति पाता । जय...

## \* श्री तुलसी जी की आरती \*

जय जय तुलसी माता, सब जग की सुख दाता वर दाता । जय-  
 सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर । रज से रक्षा करके भव त्राता । जय-  
 बटु पुत्री हे श्यामा सुर बल्ली हे ग्राम्या । विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो तर जाता । जय-  
 हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वन्दित । पतितजनों की तारिणी विख्याता । जय-  
 लेकर जन्म विजय में आई दिव्य भवन में । मानव लोक तुम्हीं से सुख सम्पत्ति पाता । जय-  
 हरि को तुम अति प्यारी वरण कुमारी । प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता । जय-

## परम पुनीत एकादशी जी की आरती

ॐ जय एकादशी, जय एकादशी, जय एकादशी माता। विष्णु पूजा व्रत को धारण कर, शक्ति मुक्ति पाता ॥ ॐ ॥  
 तेरे नाम गिनाऊँ देवी, भक्ति प्रदान करनी। गण गौरव की देनी माता, शास्त्रों में बरनी ॥ ॐ ॥  
 मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष की 'अपरा' विश्वतारनी का जन्म हुआ। शुक्ल पक्ष में हुई 'मोक्षदा' मुक्तिदाता बन आई ॥ ॐ ॥  
 पौष के कृष्णपक्ष की, 'सफला' नामक है। शुक्लपक्ष में होय 'पुत्रदा', आनन्द अधिक रहे ॥ ॐ ॥  
 नाम 'षटतिला' माघ मास में, कृष्णपक्ष आवे। शुक्लपक्ष में 'जया' कहावै, विजय सदा पावै ॥ ॐ ॥  
 'विजया' फागुन कृष्णपक्ष में शुक्ला 'आमलकी'। 'पापमोचनी' कृष्ण पक्ष में, चैत्र महाबलि की ॥ ॐ ॥  
 चैत्र शुक्ल में नाम 'कामदा' धन देने वाली। नाम 'वरुथिनी' कृष्णपक्ष में, वैशाख माह वाली ॥ ॐ ॥  
 शुक्लपक्ष में होय 'मोहिनी', 'अपरा' ज्येष्ठ कृष्णपक्षी। नाम 'निर्जला' सब सुख करनी, शुक्लपक्ष रखी ॥ ॐ ॥  
 'योगिनी' नाम आषाढ़ में जानों, कृष्णपक्ष करनी। 'देवशयनी' नाम कहायो, शुक्लपक्ष धरी ॥ ॐ ॥  
 'कामिका' श्रावण मास में आवे, कृष्णपक्ष कहिए। श्रावण शुक्ला होय 'पवित्रा', आनन्द से रहिए ॥ ॐ ॥  
 'अजा' भाद्रपद कृष्णपक्ष की, 'परिवर्तिनी' शुक्ला। 'इन्द्रा' अश्विन कृष्णपक्ष में, व्रत से भवसागर निकला ॥ ॐ ॥  
 'पापाकुशा' है शुक्ल पक्ष में, पाप हरनहारी। 'रमा' मास कार्तिक में आवे, सुखदायक भारी ॥ ॐ ॥  
 'देवोत्थानी' शुक्लपक्ष की, दुःखनाशक मैया। लौद मास में कलैं विनती पार करो नैया ॥ ॐ ॥  
 'परमा' कृष्णपक्ष में होती, जन मंगल करनी। शुक्ल लौद में होय 'पद्मिनी', दुःख दारित्र हरनी ॥ ॐ ॥  
 जो कोई आरती एकादशी की, भक्ति सहित गावै। जन 'गुरदिता' स्वर्ग का वासा, निश्चय वह पावै ॥ ॐ ॥



## एकादशियों पर गाये जाने वाले भजन

### भजन नं. 1

अब मेरी राखो लाज हरी।

प्रभु मेरी राखो लाज हरी ॥

तुम सब जानत अन्तर्यामी, करनी कुछ न करी।

अवगुन मोसैं बिससत नाहीं-नाहीं पल छिन घरी-घरी ॥

दारा सुत धन मोह लियो है सुध बुध सब बिगरी।

'सूर' पतित को वेगि उबारो अब मेरी नाव चली ॥



### भजन नं. 2

गोविन्द तुम्हीं, गोपाल तुम्हीं, घनश्याम यशोदानन्दन हो।

हे नाथ कहीं योगेश्वर हो, हे नाथ कहीं मनमोहन हो ॥

तुम आदि-अनादि हो भगवान् तुम छैल-छबैले पुरुषोत्तम।

विस्तार तुम्हारी माया का क्या मुरली मनोहर वर्णन हो ॥

आकाश में शब्द बने नटवर, आँकार बने तुम वेदों के।

पञ्चश हो सरज-चौद में तुम संसार के जीवन कारण हो।

जीवों के कष्ट निवारक हो सब लीला है तुमने ही रची।  
 कलयुग के नाशक नाथ तुम्हीं, तुम ही सतयुग संचारक हो ॥  
 भूमि का भार हरण करने प्रभु निष्कलंक बन आये हो।  
 इसी जीवन के अब प्राण तुम्हीं, स्वीकृत मेरा अभिनन्दन हो ॥



### भजन नं. 3

सबसो ऊँची प्रेम सगाई।

दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग बिदुर घर खाई ॥

जूठे फल सबरी के खाये, बहुत बिधि स्वाद बतई ॥

प्रेम के बस नृप सेवा कीन्ही, आप बने हरि नाई ॥

राजसु जग्य जुधिष्ठिर कीन्हीं तामे जूठ कटाई ॥

प्रेम के बस पारथ रथ हाँक्यो भूल गये ठकुराई ॥

ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच-नचाई ॥

सूर कूट इहि लायक नाहीं, कहैं लगि करों बड़ाई ॥



#### भजन नं. 4

हे नाथ तुम्हीं सबके मालिक, तुम्हीं सबके रखवाये हो।  
तुम्हीं सब जग में व्याप्त रहे, विभुरूप अनेकों धारे हो॥

हे नाथ...

तुम्हीं नभ जल थल अग्नि तुम्हीं, तुम सूरज चाँद सितारे हो।  
ये सभी चराचर है तुमसे, तुमहीं सबके ध्रुवतारे हो॥

हे नाथ...

मह महामूढ़ अज्ञानी जन, प्रभु भवसागर में डूब रहे।  
नहिं नेक तुम्हारी भक्ति करें, मन मलिन विषयों में खूब रहे॥

हे नाथ...

सत् संगति में नहिं जायँ कभी, खल संगति में भरपूर रहें।  
सहते दारुन दुःख-दिवस रैन, हम सच्चे सुख से दूर रहें॥

हे नाथ...

तुम दीन-बन्धु जगपावन हो, हम दीन-पतित अति भारी हैं।  
है नहीं जगत् में ठौर कहीं, हम आये शरण तिहारी हैं॥

हे नाथ...

हम पड़े तुम्हारे हैं दर पर, तुम पर तन मन धन वारे हैं।  
अब कष्ट हरो हरि हे हमरो, हम निन्दित निपट दुखारी हैं॥  
हे नाथ...

+++

#### भजन नं. 5

भज मन राम चरन सुखदाई॥

जिहि चरननि से निकसी सुरसरि शंकर जटा समाई।  
जटासंकरी नाम पर्यौ है, त्रिभुवन तारन आई॥  
जिन चरनन की चरन पादुका भरत रत्नो लवलाई।  
सोई चरन गीतम-ऋषि नारी परसि पदमपद पाई॥  
दंडक बन प्रभु पावन कोन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।  
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई॥  
कपि सुगीव बंधु भय व्याकुल तिन जयछत्र फिराई।  
रिपुका अनुज विभीषन निसिचर परसत लंका पाई॥  
शिव सनकादिक अरू ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई।  
'तुलसीदास' मारुतसुत की प्रभु जिन मुख करत बड़ाई॥

+++

#### भजन नं. 6

मने चाकर रखोजो, मने चाकर रखो जी॥ ठेक॥  
नौकर रहसूँ बाग लगासूँ नित उठ दरसन पासूँ।  
बिन्दावन की कुंज गलिन में, तेरी लीला गासूँ।  
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरण पाऊँ खरची।  
भाव भगति जागीरी पाऊँ तीनों बाताँ सरसी।  
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ती माला।  
बिन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।  
हरे-हरे नित बन बनाऊँ, बिच-बिच राखूँ क्यारी।  
साँवरिया के दरसन पाऊँ पहर कुसुम्भी सारी।  
जोगी आया जोग करण कैं तप करते सन्यासी।  
हरि भजन कैं साधु आया बिन्दावन के बासी।  
'मीर' के प्रभु गहिर गंभीर, सदा रखो जी धीर।  
आभी रात प्रभु दरसन दैहै, प्रेम नदी के तीर।

+++

#### भजन नं. 7

हमारे प्रणाम बाँके बिहारी को।

मोरमुकुट माथे तिलक विराजै, कुंडल अलंकारी को।  
अधर मधुर पर बंशी बजावे रीझावे राधाप्यारी को।  
यह छवि देख भगन मीरां, मोहन गिरवधारी को।

+++

#### भजन नं. 8

हे गोविन्द ! राखो शरण, अब तो जीवन हारे।  
नीर पीवन हेतु गयो, सिंधु के किनारे॥  
सिंधु बीच बसत ग्राह, चरन धरि पछारे॥  
चार प्रहर युद्ध भयो, ले गयो मझधारे॥  
नाक-कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे।  
हे गोविन्द ! हे गोपाल ! हे गोविन्द !  
द्वारका में शब्द भयो, भोर भयो भारे।  
शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड़ लै सिधारे॥  
'सूर' कहे श्याम सुनो, नन्द के दुलारे॥  
अबकी बेर पाप करो, शरण है तिहारे॥  
हे गोविन्द ! राखो शरण, अब तो जीवन हारे॥

+++



## भजन नं. 9

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल ।

काम क्रोध का पहिर चोलना, कण्ठ विषय की माल ॥  
महा-मोह के नूपुर बाजत, निन्दा शब्द रसाल ॥  
भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत कुसंगत चाल ॥  
तृष्णा नाद करत घट भीतर, नाना विधि दै ताल ॥  
साथ को कटि फैंटा बाँध्यों, लोभ तिलक दै भाल ॥  
कोटिक कला कौँछि देखराई, जल-थल सुधि नहिं काल ॥  
'सूरदास' को सबै अविद्या, दूर करौ नन्दलाल ॥

+++

## भजन नं. 10

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ।

मन को विषयों से हरदम हटाते चलो ॥  
देखना इन्द्रियों के न धोड़े बड़ें,  
उनमें हरदम ये संयम के कोड़े पड़ें ।  
अपने रथ को सुमारग लगाते चलो,  
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ॥

काम करते चलो नाम जपते चलो,

हर समय कृष्ण का ध्यान करते चलो ।  
काम की वासना को मिटाते चलो,

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ॥

दुःख में तड़पो मती, सुख में फूलो मती,

प्राण जाये मगर नाम भूलो मती ।

मुरली वाले को मन से रिझाते चलो,

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ॥

याद आवेगी उनको कभी न कभी,

कृष्ण दर्शन तो देंगे कभी न कभी ।

ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो,

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ॥

नाम जप से ही लोगों ने पाई गती,

भक्तों ने तो इसी सक करी विनती ।

नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो,

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ॥

+++

## भजन नं. 11

ऐसो को उदार जग माहीं ।

बिन सेवा जो द्रव्य दीन पर, राम सरि कोउ नाहीं ॥  
जो गति देत जोग विराग जतन करि, नहिं पावत मुनि ग्यानि ।  
सो गति देत गोध सबरी कहैं, प्रभु न बहुत जिय जानी ॥  
जो संपति दससीस अर्पित करि, रावन शिव पहुँ लीन्हों ।  
सो सम्पदा विभीषन कह अति, सकुच-सहित हरि दीन्हों ॥  
तुलसीदास सब भीति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो ।  
तो भजु राम, काम सब पूरन, करहिं कृपानिधि तेरो ॥

+++

## भजन नं. 12

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।  
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ॥  
छाड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहैं कोई ।  
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई ॥  
संतन कल मीन-मीन प्रेम बेलि बोंई ।

अब तो बेलि फैल गई, आणंद फल होई ॥

भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई ।

दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई ॥

+++

## भजन नं. 13

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।  
निष्काम होकर दिन रात गावो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥  
प्यारे जय तो मन में विचारो, क्या साथ लाये और ले चलोगे ।  
जावे यही साथ सदा पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥  
नारी धर्य धाम सुपुत्र प्यारे, सन्मित्र सद्बन्धव द्रव्य सारे ।  
कोई न साथी हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥  
नाता भला क्या, जग से हमारा, आये यहाँ क्यों क्या कर रहे हैं ।  
सोचो विचारो, हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥  
देहान्त काले तुम सामने हो, वंशो बजाते मन को लुभाते ।  
गाता यही मैं तन नाथ त्यागूँ हे कृष्ण, हे यादव हे सखेति ॥

+++

## भजन नं. 14

प्रभु मेरो अवगुन चित न धरो ।

समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहि करो ॥  
 इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो ।  
 यह दुविधा पारस नहि ज्ञानत कंचन करत खरो ॥  
 एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भयो ।  
 जब मिलिकै दोउ एक बरन भये सुरसरि नाम परो ॥  
 एक जीव एक ब्रह्म कहावत सूरस्याम झगरो ।  
 अबकी बेर मोहि पार उतारो नहि पन जात टरो ॥

+++

## भजन नं. 15

जसोदा हरि पालने झुलावै ।

हलरावै दुलराई मलहावै जोई सोई कछु गावै ॥  
 मेरे लाल को आठ निदरिया काहे न आनि सुलावै ।  
 तू कहे न बेगि-सो आवै तोको कान्ह बुलावै ॥  
 कबहुँ पलक हरि मूँद लेत हैं कबहुँ अधर फरकावै ।  
 सोवत जानि मीत हैं रह-रहि-करि-करि सैन बतावै ॥

इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै ।  
 जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनी पावै ॥

+++

## भजन नं. 16

गोविन्द जय जय गोपाल जय जय,  
 राधा रमन हरि गोविन्द जय जय ।  
 ब्रह्मा की जय जय विष्णु की जय जय,  
 उमापति शिव शंकर की जय जय ।  
 श्यामा की जय जय स्कर्मणि की जय जय,  
 मोर मुकुट बन्शीवारे की जय जय ।  
 गंगा की जय जय जमुना की जय जय,  
 सरस्वती-त्रिवेणी मैय्या की जय जय ।  
 राम की जय जय श्याम जी जय जय,  
 दशरथ कुँवर चारों भाईयों की जय जय ।  
 कृष्ण की जय जय लक्ष्मी की जय जय,  
 कृष्ण-बलदेव दोनों भाईयों की जय जय ।

+++

## भजन नं. 17

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै ।

गुरु के बचन अटल करि मानहिं, साधु समागम कीजै ॥  
 पहिये सुनिये भगति भागवत, और कहा कथि कीजै ।  
 कृष्णनाम बिनु जनमु बादिही, बिरथा काहे छोड़ै ॥  
 कृष्णनाम नाम-रस बहो जात है, तृषावन्त हैं पीजै ॥  
 सुरदास हरिसरन ताकियो, जनम सफल करि लीजै ॥

+++

## भजन नं. 18

चन्दन का ये मन मन्दिर है,  
 पूजा करी श्री राम की ।  
 जय-जय राम की श्री राम की ॥  
 चन्दन बदन चन्दन की टीका,  
 चन्दन भभूत रमायो-रमायो री ।  
 जय-जय राम की श्री राम की ॥

चन्दन धूप दिखायो री ।  
 जय-जय राम की श्री राम की ॥  
 चन्दन मुकुट चन्दन गले माला,  
 चन्दन कुण्डल धारी-धारी रे ।  
 जय-जय राम की श्री राम की ॥  
 चन्दन धनुष धनुष-धारी,  
 चन्दन रूप निहारी-निहारी रे ।  
 जय-जय राम की श्री राम की ॥

+++

## भजन नं. 19

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ॥ टेक ॥  
 बसत अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायो ॥  
 जनम जनम की पूजी पाई, जग में सबै खोवायो ॥  
 खरचैं नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ॥  
 संत की नाव खेवइया सतगुरु, भवसागर तरि आयो ॥  
 मोरा के प्रभु गिरधर नागर, हरखि हरखि जस गायो ॥

**भजन नं. 20**

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।  
गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है, भूलूँ न मैं कभी नाम तुम्हारा ॥  
निष्काम होकर दिन रात गाऊँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।  
देहान्तकाले तुम सामने हो, बंशी बजाते मन को लुभाते ॥  
गाते यही मैं तन नाथ त्वागूँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।  
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

**भजन नं. 21**

सोई रसना जो हरिगुन गावै ।

नैनन की छवि यहै चतुस्ता, ज्यों मकरंद मुकुंदहि ध्यावै ।  
निर्मल चित्त तौ सोई सौचो, कृष्ण बिना जिय और न भावै ॥  
खवनन की जु यहै अधिकाई, सुनि हरि कथा सुधारस प्यावै ।  
कर तेई जे स्यामहि सेवै, चरनन चलि वृन्दावन जावै ।  
सूरदास जैसे बलि ताके, जो हरिजू सो प्रीति बढ़ावै ॥

**भजन नं. 22**

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे ।  
बिनि करताल पखावज बाजे, अनहद की झणकार रे ॥  
बिनि सुर राग छतीसूँ, गावे, रोम रोम रंग सार रे ।  
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥  
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत संग अपार रे ।  
घट के सब पट खोल दिये हैं, लोक लाज सब डारे रे ॥  
होरी खेलि पीव घर आये, सोई प्यारी प्रिय प्यार रे ।  
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कैवल बलिहारी रे ॥

**भजन नं. 23**

श्री गिरधर आगे नाचूँगी ।

नाचि-नाचि पिव रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन कूं जाचूँगी ।  
प्रेम प्रीत की बौंधि घूँघरू, मुरत की कछनी काछूँगी ॥  
लोक लाज कुल की मरयादा, या में एक न राखूँगी ।  
पिव के पलंगा जा पौढ़ूँगी, मीरा हरि रंग राचूँगी ॥

रुपाधीर प्रकाशन, हरिद्वार